

A STUDY IN STORY · TRANSLATION · LANGUAGE

नित नवल कमला चौधरी

कथा, अनुवाद, भाषा आ संस्कृति



गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६ • २०२६

नित नवल कमला चौधरी

कमला चौधरीक साहित्य : कथा, अनुवाद, भाषा आ संस्कृति

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल कमला चौधरी

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

आमुख

‘नित नवल कमला चौधरी’ साहित्यक विविध विधाक भीतर एकहि सर्जनशील व्यक्तित्वक उपस्थिति देखबाक प्रयास अछि। कथा-साहित्य, अनुवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली—तीनू क्षेत्रमे कमला चौधरीक रचनात्मक आ अनुसन्धानी अभिरुचिक अलग रूप देखाइत अछि। एकर अध्ययन करैत काल रचना, अनूदित कृति आ शब्दावली-ग्रन्थक विधागत अन्तर अक्षुण्ण राखब जरूरी अछि।

प्रथम अध्यायमे आशापूर्णा देवीक कथा ‘मोनक पौती’क कमला चौधरीक मैथिली अनुवादक पाठ, शशिताराक आत्मनिर्णय, पारिवारिक स्वत्व आ भाषिक रूपान्तरणक विस्तृत आलोचना अछि। दूनू अध्ययनक समेकनमे कथानकक बारह क्रमिक पाठ-खण्ड आ बंगला-मैथिली प्रसंगक पचहत्तर तुलनात्मक स्थल एकहि क्रममे समाविष्ट कएल गेल अछि। कथ-साम्यकेँ शब्दशः समानता मानल नहि गेल अछि; मूल बंगला शीर्षक सम्बन्धी प्रश्न सेहो सावधानीसँ विवेचित अछि।

द्वितीय अध्याय ‘समय-संकेत’क चौदहो कथाकेँ मूल कथा-क्रममे पढ़ैत अछि। तृतीय अध्याय ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’क बारह अध्याय, उपसंहार आ परिशिष्टसभक सांस्कृतिक आ भाषिक महत्त्वपर विचार करैत अछि। एहि तीनू खण्डक समीक्षामे व्यक्तित्व आ समाज, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृति तथा साहित्य आ जीवनानुभवक अन्तःसम्बन्ध एक सूत्र बनेत अछि।

ग्रन्थक अन्तमे समेकित निष्कर्ष आ पुस्तकमुखी ग्रन्थसूची देल गेल अछि। जाहि प्राथमिक कृतिक प्रकाशक सम्बन्धी विवरण सुनिश्चित नहि अछि, ओतऽ अनिश्चितता स्पष्ट राखल गेल अछि; कोनो अनुमानित प्रकाशकीय सूचना प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

आमुख.....	3
अध्याय १ : मोनक पौती — अनुवाद, कथा आ तुलनात्मक आलोचना.....	6
कथा-संरचना आ विवेचनक पाठ-खण्ड.....	7
बारह पाठ-खण्डमे समग्र कथाक विवेचन.....	8
पात्र-संरचना आ नैतिक द्वन्द्व.....	14
स्त्री-अस्मिता, वैधव्य आ सम्पत्ति.....	15
अनुवाद-सिद्धान्तक प्रयोग.....	16
मैथिली भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली.....	19
कथन-कौशल, समय आ प्रतीक.....	21
अनुवादक उपलब्धि एवं आलोचनात्मक प्रश्न.....	22
बंगला शीर्षक आ कथ्यगत सम्बन्ध.....	22
कथ्यक पाँच तुलनात्मक प्रसंग-खण्ड.....	23
पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक विस्तृत मिलान.....	24
भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक अर्थक निकट-पाठ.....	39
शीर्षकान्तर, स्वत्व आ घरक पुनर्निर्माण.....	44
मोनक पौती : समग्र निष्कर्ष.....	46
अध्याय २ : समय-संकेत — चौदहो कथाक समग्र विवेचन.....	48
चौदहो कथाक पृथक आलोचनात्मक अध्ययन.....	49
कथासभक तुलनात्मक विषय-विमर्श.....	59
कथा-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण.....	61
अध्याय ३ : मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली.....	65
मूल ग्रन्थक बारह अध्यायक रूपरेखा.....	65

वेश-सम्बन्धी शब्दक निकट-पाठ.....	76
समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष.....	76
समेकित उपसंहार.....	78
ग्रन्थसूची.....	79

अध्याय १ : मोनक पौती — अनुवाद, कथा आ तुलनात्मक

आलोचना

आधार-कृति : आशापूर्णा देवी, मोनक पौती; मैथिली अनुवाद : कमला चौधरी। पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली, २०२२। ISBN 978-93-93135-12-4।

कृतिक परिचय आ आलोचनात्मक आधार

‘मोनक पौती’ बंगला लेखिका आशापूर्णा देवीक ‘Moner Jhanpi’ नामक उपन्यासिकाक कमला चौधरी द्वारा कएल मैथिली अनुवाद अछि। ई अध्ययन सम्पूर्ण उपलब्ध मैथिली संस्करणकेँ आधार बनबैत, शशिताराक व्यक्तित्व, वैधव्यक सामाजिक नियमन, सम्पत्तिक अधिकार, परिवारक स्वार्थ-स्नेह, आ उत्तरवयसक आत्मीयताक प्रश्नकेँ पढ़ैत अछि। एकर केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे अनूदित कथा केवल बंगला साहित्यक कथावस्तुकेँ मैथिलीमे नहि पहुँचेबैत अछि; ई लक्ष्यभाषाक सामाजिक लय, सम्बोधन, संवाद आ सांस्कृतिक अनुगूँजक भीतर स्त्रीक स्वतंत्र अस्तित्व पर फेरसँ विचार करबाक अवसर सेहो दैत अछि।

पद्धतिकेँ दू स्तर पर राखल गेल अछि। पहिल स्तरमे छपल मैथिली पाठक पृष्ठ-क्रम (७-८९) अनुसार कोनो हिस्सा छोड़ने बिना घटनाक्रम, पात्रक स्वर आ अर्थक विकास जाँचल गेल अछि। दोसर स्तरमे अनुवादशास्त्रक औजार—नाइडाक रूपगत एवं गत्यात्मक समतुल्यता, वेनूतीक घरेलूकरण आ परकीयकरण, वाक्य-संरचनागत रूपान्तरण, सांस्कृतिक शब्दक हस्तान्तरण, आ अनुवादक दृश्यता—केँ पाठक उदाहरणपर लागू कएल गेल अछि।

मैथिली पुस्तकक प्रकाशकीय परिचयमे मूल बंगला शीर्षक ‘Moner Jhanpi’ उल्लेखित अछि। एकर कथानकसँ घनिष्ठ साम्य रखनिहार बंगला ‘সোনার কৌটো’ शीर्षकक पाठ सेहो भेटैत अछि। शीर्षकान्तरक ऐतिहासिक सम्बन्ध निश्चित करबाक लेल मुद्रित बंगला संस्करणक प्रकाशकीय विवरण महत्वपूर्ण रहत; एतय अनुमानकेँ प्रमाणक स्थान नहि देल गेल अछि।

कथा-संरचना आ विवेचनक पाठ-खण्ड

एहि उपन्यासिकामे कथा निरन्तर रूपसँ आगौं बढ़ैत अछि; मूल पुस्तकमे ७ सँ ८९ पृष्ठ धरि पृथक् अध्याय-संख्या अथवा नियत शीर्षकक विभाजन नहि अछि। अध्ययनक सुविधार्थ बारहटा व्याख्यात्मक ‘पाठ-खण्ड’ बनाओल गेल अछि। ई सम्पादकीय वर्गीकरण अछि, मूल पोथीक अध्याय नहि। हर खण्ड पृष्ठक्रमक लगातार हिस्सा समेटैत अछि; कोनो कथात्मक पृष्ठ खाली नहि छोड़ल गेल अछि।

अध्ययन-खण्ड	पृष्ठ	मुख्य पाठ-विषय
१	७-१३	शशिताराक स्थितिक परिचय; वैधव्य, परिवार आ स्मृति
२	१४-२०	घर, मान्यता, रोजमर्रा आ समाजक दृष्टि
३	२१-२७	धर्म, परोपकार, सेवा आ स्त्रीक आत्म-अधिकार
४	२८-३४	कथोपकथन, अजित आ सम्पत्तिक अंकुरित प्रश्न
५	३५-४१	बुढ़ापा, सम्बन्ध आ परम्परागत मानक
६	४२-४९	मन्दिर, भूमि, भतीज-परिवार, रमेश मास्टर
७	५०-५६	राजबालाक कथन; पारिवारिक स्वार्थक तीव्रता
८	५७-६३	रमेशक संवाद, नूतन सम्भावना आ सन्देह
९	६४-७०	भूमिक उपयोग, खरीद-बिक्री आ आत्मनिर्णय
१०	७१-७७	जीवेशक प्रस्ताव, मोलभाव, नव-निर्माण

अध्ययन-खण्ड	पृष्ठ	मुख्य पाठ-विषय
११	७८-८४	परिवर्तन, 'हमर'क अर्थ, अपनत्वक पुनर्विचार
१२	८५-८९	अन्तिम आत्मीयता, वयसक मानक आ खुलैत अन्त

बारह पाठ-खण्डमे समग्र कथाक विवेचन

पाठ-खण्ड १ : आरम्भमे व्यक्तित्व आ वैधव्य (पृ. ७-१३)

आरम्भक पृष्ठपर शशिताराक जीवनक परिचय सपाट परिचय-पत्रक रूपमे नहि, अपितु स्मृतिपरक आ प्रश्नमूलक कथनसँ खुलैत अछि। फूलपुर आ चट्टोपाध्याय परिवारक परिवेश, विवाहक अतीत, पतिक निधन आ नेहरसँ सम्बन्धित स्थिति मिलि एक एहन स्त्रीक जीवन बनबैत अछि जे सामाजिक दृष्टिसँ विधवा आ पारिवारिक दृष्टिसँ एकटा निरन्तर जिम्मेवारीक केन्द्र छथि। कथामे हुनक मूल्यांकन करबाक सामाजिक आदति आ हुनक अपन दृष्टि आरम्भेसँ भिड़ैत रहैत अछि।

घरक भीतर सेवा करैत, लोकक काजमे हाथ बँटबैत, अपन दुख हँसीक भीतर लुका लैत शशितारा केवल करुणाक पात्र नहि बनैत छथि। आसपासक लोक हुनका 'पीसी' अथवा सम्मानसूचक पारिवारिक सम्बोधनसँ बजबैत अछि; सम्बन्धक ई जाल एकातिर आसरा दैत अछि आ दोसरातिर निजी अधिकारक सीमारेखा खींचैत अछि। पृ. ८-९ मे वैवाहिक अतीतक विवरण आ पृ. १०-१३ मे दैनिक संवादक माध्यमसँ एकाकी जीवनक व्यथा धीरे-धीरे उजागर होइत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्व ई अछि जे कथा आरम्भहि सँ 'विधवा'क स्थिर सामाजिक परिचयकेँ 'व्यक्ति'क बहुआयामी जीवनसँ चुनौती दैत अछि। पारिवारिक आ धार्मिक प्रतीक वियोगक संग मानवीय लगावक भूख सेहो जनबैत अछि। अनुवादक पहिल पृष्ठे घर-आँगनक भाषा, हास्यक हलुक झोंक आ छोट-छोट संवादसँ पाठककेँ पात्रसँ समीप आनैत छथि।

पाठ-खण्ड २ : घर-आँगन, लोकविचार आ सेवाभाव (पृ. १४-२०)

पृ. १४-१६ मे दैनन्दिन रहन-सहन, शशिताराक अपन निर्णयक प्रति सजगता आ परिवारक चिन्ता-कथन बढ़ैत अछि। एक दिस घरक मानमर्यादा अछि; दोसर दिस शशिताराक इच्छाशक्ति। सामाजिक लोकव्यवहारमे हुनक सेवा चाहल जाइत अछि, मुदा हुनक निजी मनक बात पूछबाक सजगता कम देखाइत अछि। एहि फरकक कारण पात्रक मौन सेहो अर्थवान होइत अछि।

पृ. १६-१८ मे फूल, पूजा, बच्चा आ पड़ोसक व्यवहार उल्लेखनीय अछि। शशितारापर परिवारक निर्भरता कथाक माध्यमसँ बिनु घोषणाक उधार होइत अछि। फूल तोड़बाक दृश्यकेँ मात्र घरक काज मानल जाए तँ अर्थ आधा रहि जायत; फूल निजी लगाव, पूजा आ प्राप्त-अप्राप्त स्नेहक सूचक बनैत अछि। पृ. १९-२० मे पड़ोस, परिजन आ शिक्षक-सम्बन्धी संवाद आगा कथा लेल सामाजिक मंच तैयार करैत अछि।

भाषामे प्रश्नोत्तरक क्रम 'की?', 'किएक?', 'अहाँ?' जैसन टटका उच्चारणक संग आबैत अछि। भाषिक सहजता एकटा नैतिक प्रतिरोध बनेबा योग्य अछि; एहि कथामे विशाल वैचारिक वक्तव्यसँ बेसी स्नेह, हँसी आ रोजमर्राक प्रश्न पाठकक सामने स्त्रीक अनुभूति उधारैत अछि।

पाठ-खण्ड ३ : धर्म, परोपकार आ स्वाधीनता (पृ. २१-२७)

पृ. २१-२३ मे विद्यालय, सेवा, लोकक पीड़ा, भोर-साँझक काज आ परिजनक आवश्यकता परक बातचीतसँ शशिताराक चरित्रक कर्मप्रधान पक्ष मजबूत होइत अछि। हुनक धार्मिक अथवा नैतिक प्रवृत्ति केवल कर्मकाण्ड नहि; ओ जीवित मनुक्खक दुःख-दर्दसँ जुड़ैत अछि। ताहि कारणेँ पूजाक फूल आ रोगीक सेवा एतय एक-दोसरक विरोध नहि, अलग-अलग मानवीय आवश्यकताक रूपमे देखाइत अछि।

पृ. २४-२५ मे स्वास्थ्यक चिन्ता आ साधनक प्रश्नक संग पात्रक स्वाभिमान प्रकट होइत अछि। जकर देखरेख ओ करैत छथि, से लोक हुनका केवल ममताक भण्डार बुझबाक अभ्यस्त अछि; मुदा शशिताराक लेल अपन इच्छा, अपन शरीर आ अपन समयक मूल्य सेहो अछि। पृ. २६-२७ मे पारिवारिक कथनक बीच स्नेह आ स्वार्थक भेद उधार होइत अछि।

एहि अंशमे कथा प्रेमकेँ कर्तव्यक अनिवार्य उत्तराधिकारी नहि मानैत अछि। सेवा करब मोनक सहमति होएबाक चाही, बाध्यकारी समाजक अधिकार नहि—ई विचार धीरे-धीरे निर्मित होइत अछि। अनुवादक एहि सूक्ष्म भावकेँ उपदेशक कठोर स्वरक बदला जीवित संवादक स्वरमे रखैत छथि।

पाठ-खण्ड ४ : उत्तराधिकारक प्रश्नक बीजारोपण (पृ. २८-३४)

पृ. २८-२९ मे मनुखक स्नेह, भरोसा आ भक्तिक भावक संग तर्कशील प्रश्नोत्तर अछि। पृ. ३०-३१ मे जीवनक अनुभव, सम्पत्तिक असुरक्षा आ सामाजिक उपयोगिताक बात उभरैत अछि। शशितारा केवल स्मृतिमे डूबल वृद्धा नहि; ओ कार्य, विचार आ वास्तविक परिस्थितिक संग संवाद करैत छथि।

पृ. ३२-३४ मे अजितक नाम, घरक विकास अथवा बदलैत आवश्यकता, आ जमीनक प्रश्न कथावस्तुमे क्रमशः महत्वपूर्ण बनैत अछि। कथानक एतहि सँ घरेलू भावनात्मक प्रसंगसँ आर्थिक आ कानूनी हितक दिशामे घूमैत अछि। अपन घरे घर नहि मानल जाएबाक विडम्बना, अपन अंशक बारेमे फैसला लेबाक सम्भावना—ई सभ बात स्त्रीक अधिकारक तात्पर्य प्रकट करैत अछि।

एहि खण्डकेँ स्त्री-विमर्शक दृष्टिसँ पढ़ल जाए तँ ‘सम्पत्ति’ मात्र धन नहि, निर्णय लेल स्वीकृत सामाजिक व्यक्तित्वक मापदण्ड अछि। शशिताराक आत्मीयता केकरो लेल आर्थिक आत्मसमर्पणक लिखित प्रतिज्ञा नहि अछि।

पाठ-खण्ड ५ : व्यक्तिगत बुढ़ापा बनाम सामाजिक बुढ़ापा (पृ. ३५-४१)

पृ. ३५-३७ मे परिवारक सदस्य आ परिचित लोकक संग शशिताराक बहस बारम्बार ई बात पर लौटैत अछि जे बूढ़ मनुखक इच्छा मरि नहि जाइत। घर-पड़ोसक पहचान, अतीतक सेवा, आ वर्तमानक निजी आकांक्षा सभ एकहि पात्रमे रहैत अछि। ‘बुढ़ापा’ एहि कथामे केवल देहक अवस्था नहि, समाज द्वारा पहिराओल गेल व्यवहारक नियम सेहो बनि जाइत अछि।

पृ. ३८-३९ मे आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन, नवका घर, भूमि आ परिवारक हितक चर्चा आगा बढैत अछि। पृ. ४०-४१ मे शशिताराक आत्मपरक व्याख्या दोसरक व्यवहारक संग टकराइत

अछि। प्रश्न ई नहि रहि जाइत जे हुनका की चाही; प्रश्न ई बनैत अछि जे की समाज हुनक चाहकेँ स्वीकार करबाक लेल तैयार अछि।

गद्यक शैली एहि अंशमे सूक्ष्म विडम्बनासँ भरल अछि। लोक ‘बड़ी पीसी’क सेवा आ त्यागक प्रशंसा करैत अछि, मुदा निर्णायक क्षणमे हुनक विचारकेँ शिशुक मन सम बुझबाक प्रवृत्ति राखैत अछि। एहिसँ चरित्रक भीतरक विरोध पाठकक लेल तर्कगम्य होइत अछि।

पाठ-खण्ड ६ : भूमि, मन्दिर आ रमेश मास्टरक प्रवेश (पृ. ४२-४९)

पृ. ४२-४४ मे शशिताराक नाति-नातिन, घर आ धार्मिक व्यवहारक संग जुड़ल बातचीत भूमि आ साधनक महत्त्व बढ़बैत अछि। मन्दिरक उल्लेख जीवनमे आस्था आ सामाजिक मान्यताक दोसर धरातल बनेबैत अछि। पृ. ४४-४५ मे भतीज-परिवारक अपेक्षा आ सासुरक हिस्साक बातसँ अगिला संघर्षक दिशासूचक परिस्थिति प्रकट होइत अछि।

रमेश मास्टरक उपस्थिति पृ. ४५ सँ बादक कथाभागमे निर्णायक अछि। ओ केवल ‘समाधान देनिहार पुरुष’क रूढ़ छवि नहि; हुनक संवाद शशिताराक संग मनुष्यता, भरोसा आ स्वतन्त्र जीवनक प्रश्न खड़ा करैत अछि। पृ. ४८-४९ मे बाह्य रंग-रूप, सुन्दरता आ वृद्धावस्थाक विषयपर विनोदपूर्ण वाक्य-विनिमयक बीच उदयमान आत्मीयता देखाइत अछि।

अनुवादक एहि अंशमे गुरुजनक सम्बोधन, छोट वाक्य, चुटकी आ तीक्ष्ण प्रश्नक प्रयोगसँ दू भिन्न सामाजिक पात्रक स्वर अलग राखैत छथि। कथा घरे-घर चलनिहार भाषा प्रयोग करैत बौद्धिक बात कहबाक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

पाठ-खण्ड ७ : राजबालाक प्रतिकार आ ‘हिस्सा’क नैतिकता (पृ. ५०-५६)

पृ. ५०-५२ मे राजबालाक कहब, रमेश मास्टरक बीच-बचाव आ सम्बन्धक तनाव कथानककेँ नव मोड़ दैत अछि। ‘हिस्सा’ केकर, ‘सेवा’ केकर, आ ‘कर्तव्य’ केकर—एहि बातक अलग-अलग हिसाब अछि। शशिताराक भीतरक आर्थिक चिन्ता आ मानवीय आकांक्षाक बीच अत्यधिक सरलीकरण नहि अछि।

पृ. ५३-५५ मे परिवारक भीतर ई प्रश्न उठैत अछि जे जमीन पूर्वजक धरोहर होय तँ ओकर उपयोग अथवा बिक्री पर केकर मत निर्णायक होएत। राजबालाक चिन्ता केवल खलपात्रक लोभ मानेब पर्याप्त नहि; परिवारक आर्थिक भविष्य, सामाजिक स्वामित्वक आदत आ स्त्रीक

नामपर सम्पत्तिक असामान्यता सेहो एतहि काम करैत अछि। मुदा एहि बुनोटक भीतर शशिताराक निजी स्वामित्वक अधिकार मेटाओल जा रहल अछि।

पृ. ५५-५६ मे रमेशक प्रश्न बिनु उग्रता एहि असमानताकेँ सामने अनैत अछि। सेवाक स्मरण कएला मात्रसँ केकरो निर्णयशक्ति समाप्त नहि होइत। कथाक नैतिक शक्ति एतहि अछि— स्नेह यदि स्वेच्छा पर नहि टिकल हो, तँ ओ स्वामित्वक सूक्ष्म रूप धारण कऽ सकैत अछि।

पाठ-खण्ड ८ : रमेशक मानवीय दृष्टि आ संकोच (पृ. ५७-६३)

पृ. ५७-६० मे रमेश मास्टरक बारम्बार उपस्थितिसँ शशिताराक अतीत आ वर्तमानक बीच गाढ़ संवाद होइत अछि। रजनी आदि सहायक पात्रक उल्लेख कथा-समाजक व्यापकता बनबैत अछि। शशिताराक सहज हँसी, मितभाषिता आ किछु प्रश्नपर मौन ई संकेत करैत अछि जे हुनक भीतर एखन धरि अनकहल अनुभवक अनेक तह अछि।

पृ. ६१-६३ मे परिवारक शंका, लोकक बाजब आ नव सम्बन्धक सम्भावना एकसंग प्रवाहित होइत अछि। रमेश शशिताराक संग कर्तव्यक भाषा मात्र नहि, मनक स्नेहक भाषा सेहो साझा करैत छथि। मुदा ओहि आत्मीयतापर समाजक निगरानी थिर रहैत अछि; विधवा स्त्री आ प्रौढ़ पुरुषक सहज सम्पर्कक सेहो मर्यादा-भंगक अर्थ निकालल जा सकैत अछि।

कथोपकथनक लय ओहि संकोचकेँ सजीव बनबैत अछि। प्रत्यक्ष प्रणय-घोषणा नहि होइतो सहयात्रा, सल्लाह, मौन, देखभाल, आ फेरसँ भेटबाक इच्छामे अर्थक विस्तार होइत अछि। एहि सूक्ष्मता कथाकेँ साधारण प्रेम-प्रसंगसँ अलग करैत अछि।

पाठ-खण्ड ९ : जमीनक निर्णय आ आत्मसम्मान (पृ. ६४-७०)

पृ. ६४-६६ मे अजित, जमीनक मोल, परिचितक अपेक्षा आ घर बनएबाक सोचक बीच संघर्ष अधिक स्पष्ट होइत अछि। पृ. ६६ मे शशितारा अपन हिस्साक विषयमे कहैत छथि; एहि कथनकेँ केवल क्रोध बुझब त्रुटिपूर्ण होएत। ई दीर्घ पराधीनताक पश्चात् आत्मसम्मानक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति अछि।

पृ. ६७-६९ मे जमीन बेचब वा अपन उपयोगमे लेबाक अनेक सम्भावना उठैत अछि। शशितारा अपन आर्थिक निर्णयकेँ नैतिक अथवा सामाजिक उद्देश्यसँ जोड़ि देखैत छथि। परिवारक लोक एहि निर्णयमे अपन नोकसान अनुभव करैत अछि, ताहिसँ अन्तर्निहित स्वार्थ बेपर्द होइत अछि।

पृ. ७० पर घटनाक आवृत्ति आ बहसक तनाव चरम दिशामे पहुँचैत अछि। अनुवादक कथा-भाषामे ‘हमर’, ‘हिस्सा’, ‘जमीन’, ‘मकान’ आदि ठोस शब्द राखैत छथि; एहि वस्तुगत शब्दावलीमे स्त्रीक अधिकार भावुक आग्रह नहि, वास्तविक नागरिक प्रश्न बनैत अछि।

पाठ-खण्ड १० : जीवेशक प्रश्न आ नव-निर्माण (पृ. ७१-७७)

पृ. ७१-७३ मे जीवेश आ सम्पत्तिसँ सम्बन्धित प्रसंगक कारण आर्थिक प्रस्ताव ठोस रूप लेबैत अछि। जमीन बेचबाक इच्छा, खरीददार, भाव, भविष्यक सुरक्षा आ पारिवारिक स्वार्थ—सभ एकहि समय उपस्थित अछि। शशिताराक पुरान घरक रंग-रूप बदलबाक विचार ओहि व्यापक विचारक मूर्त अभिव्यक्ति अछि जे जीवनक अन्तिम चरणमे सेहो नव आरम्भ सम्भव अछि।

पृ. ७४-७५ मे अजितक तर्क, शशिताराक दृढ़ता आ कथाक भीतरक सामाजिक विडम्बना एकसंग प्रकट होइत अछि। अजित जमीनक आर्थिक मूल्य देखैत अछि, शशितारा ओकर सहारे अपन अस्तित्व आ भविष्यक अर्थ निर्धारण करय चाहैत छथि। एहि टकरावमे केकरो पूर्ण सरल ‘सज्जन’ वा ‘दुर्जन’ घोषित नहि कएल जा सकैत; तथापि स्त्रीक स्वतंत्र सहमति नैतिक कसौटी बनल रहैत अछि।

पृ. ७६-७७ मे घर, काज, बाजार आ निर्माणक चित्र अदृश्य भावनाक भौतिक आधार तैयार करैत अछि। नवका मकान केवल देवाल नहि; ओहि ठाम शशिताराक इच्छाक स्वीकार्यता आ भविष्यक आवास-सुरक्षाक आकांक्षा समाहित अछि।

पाठ-खण्ड ११ : अपनत्वक नूतन अर्थ (पृ. ७८-८४)

पृ. ७८-७९ मे शशिताराक कार्य-व्यस्तता आ रमेश मास्टरक संग बढैत विश्वास जीवनक नवी ऊर्जा देखबैत अछि। ‘हमर’ जैसन सामान्य सर्वनाम एतय गम्भीर बनि उठैत अछि। परिवार केवल रक्तक नातेसँ परिभाषित नहि; परस्पर सम्मान, स्नेह आ व्यवहारसँ सेहो बनैत अछि—एहि नैतिक प्रस्तावक बुनोट स्पष्ट देखाइत अछि।

पृ. ८०-८२ मे कथाक केन्द्रमे एकाकी वृद्धावस्था, भावनात्मक निकटता आ जीवनक सम्भावित परिवर्तन अछि। शशिताराक भीतर सामाजिक लज्जा, पुरान स्मृति आ नूतन उन्मुखता सह-अस्तित्वमे अछि। पाठककेँ महसूस होइत अछि जे स्वतन्त्र जीवन चाहब आ दोसरक स्नेह चाहब एक-दोसरक विरोधी नहि अछि।

पृ. ८३-८४ मे सामाजिक कटुता, दूसर घरक व्यवहार आ भतीज-परिवारक बुनोटकेँ नवी दृष्टिसँ देखल जाइत अछि। शशितारा बिनु एखनो निश्चित 'समाधान'क घोषणा किएने निजी स्वीकार आ अस्वीकारक अधिकार अपन भीतर सँ पुनः अर्जित करैत छथि।

पाठ-खण्ड १२ : अन्तिम निर्णयक पूर्वसन्ध्या आ खुलैत प्रेम (पृ. ८५-८९)

पृ. ८५-८६ मे पारिवारिक निमन्त्रण, वृद्धा स्त्रीक प्रति सम्मान, आ सम्बन्धक सम्भावनासँ कथा चरम बिन्दुक लग जाइत अछि। रमेश मास्टरक स्वरमे आकस्मिक अपनत्व छलकैत अछि, जखन कि शशिताराक भीतर लाज, विवेक, स्नेह आ आशंका घुलैत अछि। सामाजिक लोकाचार आ व्यक्तिगत सुखक दूरी पूरा कथाक तनावक अन्तिम रूप बनैत अछि।

पृ. ८७ मे घर, परिवार आ रक्तसम्बन्धक सीमाकेँ लांघि मनुष्यक अर्थ कोना बनैत अछि, से प्रश्न अत्यन्त सूक्ष्म अछि। पृ. ८८-८९ मे शशिताराक स्मृतिमे रमा गेल जीवनक वर्ष, मृत्यु-बोध आ नूतन स्नेह आमने-सामने आबैत अछि। अन्तिम पृष्ठपर रमेश मास्टर आ शशिताराक बीच छोट-छोट संवाद 'प्रेम'केँ वयसक गणितसँ अलग करैत अछि; एतय भावुक अतिशयोक्ति नहि, साझा जिम्मेवारी आ जीवनक नूतन अर्थक संकेत अछि।

समाप्तिकेँ केवल सामाजिक रूढ़िक पूर्ण पराजय अथवा वैवाहिक परिणति कहब पाठक सँ बेसी निष्कर्ष निकालब होएत। अधिक संगत पाठ ई अछि जे उपन्यासिका शशिताराक भीतर सँ बंद भऽ गेल स्नेहक दरबज्जा खोलैत अछि आ पाठककेँ एक अनिर्णीत किन्तु गरिमामय सम्भावना देइत अछि।

पात्र-संरचना आ नैतिक द्वन्द्व

शशितारा : सेवाभावक भीतर स्वतंत्र चित्त

शशितारा कथाक केन्द्र छथि। हुनक चरित्रक बनावट तीन परतमे देखाइत अछि: अतीतक वैधव्य आ पारिवारिक प्रतिष्ठा; वर्तमानक सेवा, श्रम आ सामाजिक सम्मान; आ भविष्यक अधिकार, स्नेह आ निर्णय। घरक काजमे निपुणता हुनक चेतनाक सम्पूर्णता नहि अछि। जखन जमीनक प्रश्न उठैत अछि तँ आर्थिक अधिकारक संग हुनक मनक स्वतंत्रता स्पष्ट भऽ उठैत अछि। एहि अर्थमे कथाक नायिका स्वतन्त्रताकेँ एकाकीपनक पर्याय नहि बुझैत छथि।

राजबाला : घरक व्यवहार आ स्वार्थक जटिलता

राजबालाक कथनमे कोनो समय स्नेह, कोनो समय अधिकारक आग्रह, आ कोनो समय परिजनक हानि होएबाक डर बोलैत अछि। हुनका एकरंग खलपात्र मानि देला सँ सामाजिक यथार्थ छूटि जाएत। परिवारक नामपर स्त्रीक सम्पत्तिक निर्णयकेँ सामूहिक नियंत्रणमे लएबाक प्रक्रिया हुनक व्यवहारमे देखाइत अछि। ताहिसँ पात्र सामाजिक व्यवस्था द्वारा सिखाओल गेल अपेक्षाक प्रतिनिधित्व सेहो करैत अछि।

रमेश मास्टर : सहानुभूति आ समकक्षताक परीक्षा

रमेश मास्टरक काज मात्र विवाद सुलझेबाक नहि अछि। ओ प्रश्न करैत, सुनैत, सुझाव दैत आ मानवीय सम्बन्धक सम्भावनाकेँ आदर दैत देखाइत छथि। तथापि आलोचनात्मक सावधानी ई आवश्यक अछि जे शशिताराक मुक्ति रमेशक कृपा मात्रसँ घटित नहि मानल जाए। कथा पहिनेसँ शशितारामे दृढ़ चित्त आ उद्यमशीलता दिखा चुकल अछि। रमेशक योगदान ओहि स्वीकृतिक सहयात्रा अछि, उद्गम नहि।

अजित, जीवेश आ सामाजिक परिजन

अजितक संग सम्पत्ति आ निवासक विषय अनेक बेर उठैत अछि; जीवेशक आर्थिक अथवा पारिवारिक सन्दर्भक संग भूमि-व्यवहार ठोस बनैत अछि। एहन पात्र कथाक ‘दूसर पक्ष’केँ स्वर दैत अछि। पड़ोसी, परिचित, शिष्य आ परिवारक आन लोक शशिताराक सार्वजनिक छवि बनबैत छथि; ओहि छविक दबाव आ व्यक्तिगत अनुभवक अन्तर कथावस्तुकेँ गति दैत अछि।

स्त्री-अस्मिता, वैधव्य आ सम्पत्ति

विधवाक शरीरक सामाजिक नियन्त्रण

कथाक आरम्भमे वैधव्य एकटा सामाजिक नियति जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। विधवाक अर्थ केवल पति-वियोग नहि; वस्त्र, व्यवहार, यात्रा, हँसी, स्नेह आ भविष्यक इच्छाक ऊपर लगाओल सीमा सेहो अछि। शशितारा ओहि सीमाकेँ सीधे भाषणसँ कम, अपन व्यक्तित्वक निरन्तर प्रदर्शनसँ प्रशङ्कित करैत छथि। उत्तरवयसक स्त्रीक प्रेमयोग्यता पर समाजक सन्देह एहि पूर्वाग्रहक अधिक सूक्ष्म रूप अछि।

सेवाक राजनीति

घरमे लोक जकरा ‘पीसी’ कहि आदर करैत अछि, ओकर श्रम आ समयपर सहज दावा राखि दैत अछि। एहि कथाक आलोचनात्मक पाठ देखबैत अछि जे कृतज्ञताक भाषा सेहो कखनो सामाजिक नियंत्रणक साधन भऽ सकैत अछि। जँ सेवा स्वेच्छासँ हो तँ ओ मूल्यवान अछि; जँ सेवा स्त्रीक एकमात्र सामाजिक भूमिका बना देल जाए तँ ओकर मनुष्यत्वक अन्य पक्ष वंचित रहैत अछि।

सासुरक उत्तराधिकार-सम्बद्ध भूमि आ निर्णायक हक

भूमिक सवालक कारण परिवारक भीतर वास्तविक शक्ति-सन्तुलन प्रकट होइत अछि। एक स्त्रीक नामपर रहल अधिकारकें कुलक हितक नामपर सीमित करबाक प्रयास कथामे प्रश्नोत्तरक रूप लैत अछि। शशिताराक दलीलकें केवल लोभ वा जिद्दीपन कहल जाए तँ आर्थिक स्वायत्तताक मूल प्रश्न ओझराइत अछि। घरक भौतिक संरचना आ स्त्रीक मानसिक ‘घर’ एहि कथामे एक-दोसरकें अर्थ दैत अछि।

उत्तरवयसक प्रेम : निषेधसँ सहचर्य धरि

रमेश मास्टर आ शशिताराक बीच धीरे-धीरे बनैत आत्मीयतामे लोक-लज्जाक उपस्थिति सतत अछि। कथा चाहैत अछि जे पाठक देहक उमेर, वैवाहिक अतीत आ समाजक मान्यतासँ परे भावनात्मक सहयात्राक सम्भावना बुझय। ई निष्कर्ष पारम्परिक पारिवारिक जीवनक सरल अस्वीकृति नहि; प्रेमक नैतिक शर्त—सम्मान, परस्परता, स्वेच्छा—पर बल अछि।

परिजन बनबाक वैकल्पिक आधार

कथाक अन्त दिशामे ‘हमर’ शब्दक आवृत्ति अर्थपूर्ण भऽ उठैत अछि। लोकक अपन होयबाक आधार केवल रक्तसम्बन्ध नहि, एक-दोसरक दुःख-सुखमे सहभागी बनबाक स्वीकृति सेहो अछि। परिजनक परिभाषा विस्तृत करबाक ई आग्रह कथा-वस्तुक मानवीय उपलब्धि अछि।

अनुवाद-सिद्धान्तक प्रयोग

मैथिली रूपान्तरणक आलोचना करबाक समय एकटा भेद निरन्तर स्पष्ट राखब चाही: (क) अनूदित मैथिली पाठमे वस्तुतः की देखा पड़ैत अछि, आ (ख) बंगला मूलसँ ओकर भिन्नता की

अछि। पहिल प्रश्नक उत्तर उपलब्ध पाठसँ भेटैत अछि; दोसर प्रश्नक प्रामाणिक उत्तरक लेल बंगला मूलक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान आवश्यक अछि। नीचाँ सिद्धान्तक प्रयोग पहिल प्रश्नक क्षेत्रमे कएल गेल अछि।

नाइडाक रूपगत आ गत्यात्मक समतुल्यता

यूजीन नाइडा अनुवादमे मूल सन्देशक समीपवर्ती स्वाभाविक समतुल्य रूपकेँ महत्त्व देलनि। रूपगत समतुल्यतामे मूल रूप आ भाषिक संरचनाक निकटता प्रधान होइत अछि, जखन कि गत्यात्मक समतुल्यतामे पाठकपर अर्थक प्रभावक तुलनीयता अपेक्षित होइत अछि। ‘मोनक पौती’क कथोपकथन लक्ष्यभाषाक श्रोता-पाठककेँ स्वाभाविक लगे, एहि दृष्टिसँ ‘अहाँ’, ‘हमर’, ‘किएक’, ‘तँ’, ‘छिए’ आदि व्यवहार्य भाषारूपक उपस्थिति गत्यात्मक समतुल्यताक सम्भावित अनुकूलन देखबैत अछि। मुदा मूल बंगला पाँति नहि देखलाक कारण ई कहब अनुचित होएत जे अमुक वाक्य प्रमाणित रूपसँ गत्यात्मक शैलीमे अनूदित भेल अछि।

वेनूती : घरेलूकरण आ परकीयकरण

लॉरेन्स वेनूतीक दू रणनीतिकेँ ई पुस्तक एक संग बुझबाक निमित्त आमन्त्रण दैत अछि। पाठकसमक्ष ‘पीसी’, ‘भोजी’, ‘माय’, ‘बाबूजी’ जैसन सम्बोधन लक्ष्यभाषा-सुलभ आत्मीयता रचैत अछि—ई घरेलूकरणक पाठकीय प्रभाव अछि। आन दिस ‘चट्टोपाध्याय’, ‘बन्दोपाध्याय’ सन कुलनाम आ बंगालक स्थानिक सामाजिक वातावरणक चिह्न अलग सांस्कृतिक उत्पत्ति बनौने राखैत अछि—ई परकीय सांस्कृतिक चिह्नक संरक्षणक उदाहरण अछि। दूनू रणनीति एकहि पुस्तकमे सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि; एकर मूल्यांकन केवल ‘शुद्ध’ बनाम ‘अशुद्ध’क द्वैतमे नहि कएल जाए।

कथ्य-निष्ठा आ भाव-निष्ठाक भिन्नता

असली अनुवाद-समस्या केवल कोशगत शब्दक समानार्थी खोजब नहि अछि। स्त्रीक मौन, दबी हास्य-रेखा, लोकक व्यंग्य, पारिवारिक अधिकारक हिंस्रता आ वृद्ध प्रेमक संकोच कहबाक ढंगमे बसैत अछि। एहन प्रसंगमे शब्दशः रूपान्तर पात्रक आवाज निस्सार कऽ सकैत अछि। मैथिली अनुवादमे संवाद-लय आ सामाजिक सम्बोधनक स्वाभाविक उपस्थिति भाव-निष्ठाक विश्लेषण लेल महत्त्वपूर्ण पाठ-साक्ष्य अछि।

संरचनागत रूपान्तरणक परीक्षण

बंगला आ मैथिली दूनू पूर्वी भारतीय भाषिक परिवेशक निकट भाषासमूहसँ सम्बन्धित अछि, तथापि कारक, क्रिया, आदरसूचकता आ वाक्य-समाप्ति समान नहि। उदाहरणार्थ मैथिलीमे सम्बन्ध-सूचक ‘क’, ‘सँ’, ‘मे’, ‘लेल’ आ क्रियाक ‘छथि/छलथि/होइत अछि’ रूप पात्रक सामाजिक दूरी सूचित करैत अछि। अनुवादमे वाक्य-विभाजन, प्रत्यक्ष कथनक चिह्न, क्रियाक आदरस्तर आ अव्ययक स्थान जाँचब आवश्यक अछि। उपलब्ध पाठमे कथात्मक अनुच्छेद आ छोट संवादक आवृत्ति अपन भाषा-स्वभावक अनुरूप देखाइत अछि; मूलसँ वास्तविक ‘शिफ्ट’क सूची बनएबाक लेल समांतर बंगला पाठ चाही।

स्कोपोस अथवा प्रयोजन-आधारित दृष्टि

प्रयोजन-आधारित सिद्धान्त प्रश्न करैत अछि: ई अनुवाद किनका लेल आ कोन सांस्कृतिक कार्य लेल? कमला चौधरीक आमुख (पृ. ५-६) बंगला सँ मैथिलीमे साहित्यिक कृति पहुँचेबाक महत्त्व रेखांकित करैत अछि। अतः सामान्य मैथिली पाठककेँ उपन्यासिकाक सौन्दर्य, भाव आ सामाजिक प्रश्न उपलब्ध कराएब एक उचित पाठकीय प्रयोजन ठहरैत अछि। ओहि प्रयोजनसँ दैनिक जीवित मैथिली, सुबोध कथन आ अर्थवत्ता उपयोगी अछि। तथापि पाठक-अनुकूलनक नामपर बंगला परिवेशक मूल छवि मेटा देब उचित नहि होएत।

अनुवादकक दृश्यता

अनुवादकक नाम मुखपृष्ठ, शीर्षक-पृष्ठ आ आमुखमे स्पष्ट देखाइत अछि। अनुवादकेँ निष्प्राण परिवहन नहि, एकटा रचनात्मक चयन मानबाक आधार एतहि उपलब्ध अछि। बोलचालक अभिव्यक्ति, सम्बन्धसूचकता, वाक्यक लय आ सांस्कृतिक परिचय लक्ष्यभाषाक रचनात्मक श्रमकेँ उजागर करैत अछि। एहि श्रमक आलोचनामे अनुवादकक उपलब्धिकेँ लेखिकाक मूल सर्जनासँ अलग मान्यता देब आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली

भाषा-रूपक विशेषता

छपल पाठमे मैथिली सर्वनाम, सम्मानसूचक क्रिया, प्रश्नसूचक अव्यय, सम्बन्ध-प्रत्यय आ लोकप्रचलित संयुक्त पद प्रमुख अछि। ‘अहाँ’, ‘हम’, ‘हुनका’, ‘हमर’, ‘की’, ‘किएक’, ‘सँ’, ‘तँ’ सन रूप भाषाकें सामाजिक सान्दर्भिकता दैत अछि। अनेक स्थल पर कथावाचकक भाषा आ संवादक भाषा बीच निकटता अछि, मुदा पात्रक परिस्थिति बदलैत शब्दक स्वर सेहो बदलैत अछि। ई एकर अनुवाद-सम्भावित महत्त्वपूर्ण गुण अछि।

सम्बोधनक सामाजिक व्याकरण

‘पीसी’, ‘बाबूजी’, ‘भोजी’, ‘मास्टर’, ‘माय’ केवल नाता सूचित करबाक शब्द नहि; ई सम्मान, आयु, अधिकार आ अपनत्वक सम्बन्ध रचैत अछि। एके पात्रकें सम्बोधन बदलैत घटनाक अर्थ बदलि सकैत अछि। पाठककें पात्रक सामाजिक स्थान बुझेबाक लेल अनुवादकक सम्बोधन-चयन कथाक मूल कथानक जतेक महत्त्वपूर्ण होइत अछि।

पाठ-आधारित भाषिक उदाहरण : व्याख्यात्मक सूची

शब्द/अभिव्यक्ति	सन्दर्भ-पृष्ठ	अनुवादालोचनात्मक कार्य
‘पीसी’	८-२१, ४१	आयु, पारिवारिक नाता आ सामाजिक अपेक्षा
‘अजिया’	८	स्नेहपूर्ण नाता-सम्बोधनक घरे-घरक अर्थ
‘फूल’ / ‘फूलपुर’	१६-१८, ७८-८९	पूजा, स्मृति, स्थानिकता आ मानवीय लगाव
‘भोजी’	२८, ४८-६३	सम्बन्धमे आत्मीयता एवं वयसगत सम्मान
‘मास्टर’	२०-२१, ४५-८९	पेशा-सूचक संज्ञा सँ व्यक्तिगत सम्बन्ध धरि
‘हिस्सा’	३३-३४, ५०-६९	सम्पत्ति आ स्वतन्त्र निर्णयक संघर्ष

शब्द/अभिव्यक्ति	सन्दर्भ-पृष्ठ	अनुवादालोचनात्मक कार्य
‘जमीन’	३२-३४, ६४-७७	आर्थिक अधिकारक ठोस प्रतीक
‘मकान’	३३-३९, ६७, ७४-७९	रहबाक ठाम सँ आत्मनिर्माणक रूपक
‘हमर’	६६-६९, ७८-८३	मालिकाना आ स्नेह दूनूक प्रश्न
‘रंग-रूप’	३७-४०, ४८-४९	बाह्य रूप आ व्यक्ति-मूल्यक अन्तर
‘मन्दिर’	१२-१३, ४४, ५५	धार्मिकता आ लोकहितक द्वन्द्व
‘बुढ़ापा’ / ‘वयस’	६०-६४, ८५-८९	मानवीय कामना पर सामाजिक नियमन

भाषिक शुद्धताक अर्थ

शुद्ध मैथिलीक अर्थ अन्य भाषासँ ऐतिहासिक सम्पर्कक प्रत्येक चिह्न मेटा देब नहि अछि। मूल उपन्यासिकाक बंगाली सांस्कृतिक सन्दर्भ बनौने राखि मैथिलीक व्यवहृत व्याकरण, सम्मानसूचकता, क्रियापद, रजिस्टर आ मुहावरा सजीव राखब वास्तविक भाषिक निष्ठा अछि। एतय पाठक भाषा अपन घरे-घरक कहन बुझैत अछि, आ बंगालक कथा अपन विशिष्ट परिवेश सेहो रखैत अछि। एहने संतुलनक आधारपर साहित्यिक अनुवादक गुण विवेचित होएबाक चाही।

संवादक दृष्ट्यात्मकता

अनुवादमे संवाद बहुधा छोट, तीक्ष्ण आ प्रश्नोत्तरपर आधारित अछि। पात्रक वाक्यमे अर्धकथन, विनोद, कटाक्ष, अनिश्चितता आ मौनक अन्तर्गत अर्थ अछि। पृ. ५०-५५ मे हिस्सा-सम्बन्धी संवाद आ पृ. ८५-८९ मे स्नेह-सम्बन्धी संवाद तुलनात्मक रूपसँ पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे एकहि भाषामे आरोपक तीखापन आ अपनत्वक कोमलता दूनू व्यक्त करबाक सामर्थ्य अछि। ई कथात्मक लय अनुवादक पक्षमे एकटा ठोस उपलब्धि अछि।

कथन-कौशल, समय आ प्रतीक

स्मृतिक क्रम आ वर्तमानक गति

कथा विगतक स्मृति आ वर्तमानक कामक बीच चलैत अछि। शशिताराक पतिक मृत्युक अनुभव, घरक पुरान व्यवस्था आ पारिवारिक अपेक्षा विगतक बोझ रचैत अछि। एही बीच नवका जमीन, मकान, आर्थिक फैसला आ रमेशक निकटता वर्तमानकें गति दैत अछि। समयक ई टकराव पाठककें बोध करबैत अछि जे वृद्धा स्त्रीक जीवन केवल बचल इतिहास नहि, बनैत वर्तमान सेहो अछि।

फूलक प्रतीक

फूल घर, पूजा, स्नेह आ अल्पायुषी सौन्दर्यक बहुस्तरीय संकेत अछि। कथा-आरम्भमे फूलक दृश्य पारिवारिक श्रम आ धार्मिक व्यवहारसँ जुड़ैत अछि; अन्तमे भावनात्मक नवी अर्थक बोध सेहो सम्भव बनैत अछि। फूलकें प्रत्येक स्थलपर एकहि स्थिर अर्थ देब उचित नहि; ओकर अर्थ प्रसंगक संग बदलैत अछि।

मकान बनाम घर

‘मकान’ ईंट-पत्थरक भौतिक ठाम अछि, जखन कि ‘घर’ अपन मानल जाएबाक अनुभूति अछि। कथामे पुरान मकानक अधिकारक प्रश्न आ नव निर्माणक सपना परस्पर जुड़ल अछि। जकरा परिवारक ‘अपन’ मानल जाइत अछि, ओकरा निर्णयक हक छैक कि नहि—एहि सवालकें भूमि आ मकान दृश्यमान बनबैत अछि।

हास्य आ विडम्बनाक काम

शशिताराक हँसी आ निकट परिचितक हलुक चुटकी प्रायः गम्भीर अर्थ लुकावने रहैत अछि। हँसी दुख मेटा नहि दैत; जीवनक जटिलता वहन करबाक शक्ति बनैत अछि। एहि सूक्ष्म लयक कारण लेखकक सामाजिक आलोचना उग्र घोषणामे सीमित नहि रहैत।

खुलैत समाप्ति

अन्तिम दृश्यकें अन्तिम वैवाहिक निर्णयक प्रमाण बनएबाक बजाए नैतिक स्वीकृतिक दृष्टिसँ देखल जाए। रमेशक संवाद आ शशिताराक चित्त-परिवर्तन प्रेम आ जिम्मेदारीक उभरैत रूप

देखबैत अछि। पाठककें जीवनक अन्तकालमे सेहो रूपान्तर सम्भव अछि—ई बोध हासिल होइत अछि।

अनुवादक उपलब्धि एवं आलोचनात्मक प्रश्न

प्राप्त पाठसँ देखाइत उपलब्धि

पहिल उपलब्धि, कथा मैथिली पाठक लेल जीवित घरेलू गद्यक रूप धारण करैत अछि; संवादक भीतर शब्द मात्र नहि, सामाजिक क्रिया सेहो होइत अछि। दोसर, बंगला पृष्ठभूमिक ठोस चिह्न कुलनाम आ परिवेशक संग बचल अछि; सम्पूर्ण स्थलांतरणक कृत्रिमता नहि देखाइत अछि। तेसर, स्त्रीक अधिकार आ निजी स्नेहक सूक्ष्म भावक प्रेषणमे भाषाक कोमलता आ तर्कक कठोरता एक-दोसरक पूरक बनैत अछि। चारिम, आमुखमे अनुवादक अपन साहित्यिक प्रयोजन स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छथि।

आलोचनात्मक परीक्षणक चारि प्रश्न

१. समान पात्र द्वारा प्रयोग कएल सम्मानसूचक क्रियाक रूप सम्पूर्ण पाठमे स्थिर अछि कि परिस्थिति अनुसार बदलैत अछि?
२. बंगला सांस्कृतिक संकेतक स्थानपर मैथिली शब्द चुनलापर मूल स्थानिक अर्थ कतहु मन्द तँ नहि पड़ल?
३. संवेदनशील दृश्यसभमे कथावाचकक स्वर आ पात्रक आवाज स्पष्ट अलग पहिचानल जाइत अछि कि नहि?
४. जमीन, सम्पत्ति, परिवार आ उत्तराधिकारक कानूनी-सामाजिक पदसभ सुसंगत रूपसँ प्रयुक्त अछि कि नहि?

बंगला शीर्षक आ कथ्यगत सम्बन्ध

‘मोनक पौती’क प्रकाशकीय परिचयमे ‘Moner Jhanpi’ मूल बंगला शीर्षक बताओल गेल अछि। दोसर दिस, ‘मोनार कोटो’ शीर्षकसँ जुड़ल शशितारा-कथाक घटना-क्रम एहि मैथिली अनुवादसँ घनिष्ठ मेल रखैत अछि—फूलपुरक चर्चा, बालवैधव्य, अजितक विधिक

सलाह, वीरनगर, राजबाला, रमेश मास्टर, भूमि बेचि घरक जीणोंद्वार आ नवजीवनक रूपक सभ एहि साम्यकें पुष्ट करैत अछि। शीर्षकभेदक प्रकाशन-इतिहास अलग ग्रन्थसूचनात्मक प्रश्न अछि।

शीर्षकभेदक कम-सँ-कम दू सम्भावना अछि : एकर स्रोत कोनो भिन्न बंगला संस्करण हो, अथवा मैथिली शीर्षकक चयन भावात्मक पुनर्नामकरणक फल हो। प्रत्यक्ष प्रकाशकीय साक्ष्य बिना एको सम्भावनाकें निश्चित ऐतिहासिक निष्कर्ष मानब उचित नहि।

‘जानात्र कौटो’क कथाप्रवाहकें तुलनाक सुविधा लेल पाँच प्रसंग-खण्डमे पढ़ल जा सकैत अछि। मैथिली ‘मोनक पौती’क कथा पृष्ठ ७-८९ धरि अविरल अछि; एहि कारण पाँच खण्ड मूल लेखिकाक प्रमाणित अध्याय-विभाजन नहि, तुलनात्मक आलोचनाक व्यवस्था अछि।

शशिताराक विधवाधिकारकें सासुरक उत्तराधिकार-सम्बद्ध सम्पत्ति बनाम नेहरक स्मृतिक अन्तरमे देखब चाहिए। सम्पत्तिक प्रश्नकें केवल पैतृक भूमि कहब कथा-सन्दर्भक अवमूल्यन हएत। प्रेमक अन्तिम रूपककें सेहो मात्र रमेश मास्टरक संग व्यक्तिगत आकर्षणमे सीमित नहि कएल जा सकैत अछि।

कार्याधारित (स्कोपोस) आ स्त्रीवादी अनुवाद-आलोचना

मैथिली पाठक लेल अनुवादक प्रयोजन केवल बंगला सूचना पठेनाइ नहि; शशिताराक सत्ता, व्यथा, हास्य, कौटुम्बिक सम्बन्ध आ विवशता मैथिली अनुभवक धरातलपर जीवित करब सेहो अछि। स्त्रीवादी अनुवादपाठमे सावधानी रहबाक चाही जे विधवा-बौक अधिकारकें दानक रूपमे, आ पुरुषक अनुमोदनकें ओकर मुक्ति-कारणक रूपमे एकांगी प्रस्तुत नहि कएल जाय।

कथ्यक पाँच तुलनात्मक प्रसंग-खण्ड

बंगला प्रसंग-खण्ड	मैथिली मुद्रित पृष्ठ (सन्निकट)	कथ्यक प्रमुख स्थिति
५	७-११/२२	फूलपुर, बचपन, वैधव्य, ग्राम- व्यवस्था, अनाथ मास्टर

बंगला प्रसंग-खण्ड	मैथिली मुद्रित पृष्ठ (सन्निकट)	कथ्यक प्रमुख स्थिति
२	२१/२२-३९	ग्रामक समाज-सेवा, अजितक सलाह, वीरनगरक आगमन, पुरान घर
७	३९-५४	राजबाला, रमेश, स्मृति, घरक इतिहास, “हमर” सम्बन्ध
८	५५-७३	मन्दिर, पारिवारिक तनाव, भूमि बेचब, जीर्णोद्धार, जीवेशक आपत्ति
९ (शशितारा-कथा मात्र)	७३-८९	अजितक प्रतिक्रिया, नब बसावट, फूलपुरक प्रतिक्रिया, अन्तिम प्रेम-रूपक

पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक विस्तृत मिलान

आगाँक पचहत्तर प्रसंग-कणिका बंगला कथ्य आ मैथिली अनुवादक क्रमबद्ध तुलनात्मक विवेचन अछि। प्रत्येक स्थलपर बंगला प्रसंग, मैथिली पुस्तकक पृष्ठ आ आलोचनात्मक व्याख्या रखल गेल अछि। ई सम्पूर्ण कृतिक घटनाप्रवाहकें समेटैत अछि, मुदा शब्दशः दुभाषिक पाठान्तरक निर्णायक संस्करण नहि अछि।

तुलनात्मक खण्ड 1 : ग्रामजीवन, बालवैधव्य आ सामाजिक सत्ता

बंगला साक्ष्य: “सोनार कोटो – 1”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

01 | मैथिली पृ. ७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : फूलपुरमे असामान्य खबरक कानाफूसी

मैथिली पाठ-संकेत : “खबरि अछि जोरदार”सँ कौतुहलपूर्ण आरम्भ

आलोचनात्मक टिप्पणी : सूत्र-निष्ठा संग बोलीक स्वाभाविक विस्मय; उद्घाटन-लय समान।

02 | मैथिली पृ. ७-८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहुत दिनसँ उपेक्षित सासुर जयबाक आश्चर्य

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक सासुरक यात्रा पर एक-पर-एक प्रश्न

आलोचनात्मक टिप्पणी : छोट प्रश्नक अनुक्रम आश्चर्यकेँ सामूहिक मनोविज्ञान बनबैत अछि।

03 | मैथिली पृ. ८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रूप, केश आ कठोर उपवाससँ परिवर्तित देह

मैथिली पाठ-संकेत : पुरान सुन्दर रूप आ वर्तमान कठोरता बीच वैषम्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : रूपक वक्रोक्तिक धार सुरक्षित राखब मुख्य कसौटी।

04 | मैथिली पृ. ८-९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नौ वर्षमे विवाह आ वैधव्य

मैथिली पाठ-संकेत : बालविवाह आ विधवाक सामाजिक निर्माण

आलोचनात्मक टिप्पणी : जीवनक हिंसक व्यवस्था, मात्र व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहि।

05 | मैथिली पृ. ९-१० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अघोर चटोपाध्यायक वंश-नियन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : पितामहक प्रताप आ पुनर्विवाह-विरोध

आलोचनात्मक टिप्पणी : वंश/धर्मक शब्दसमूह राजनीतिक सत्ता सूचबैत अछि।

06 | मैथिली पृ. ९-१० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : शशिताराक बाबूक पुनर्विवाहक इच्छा

मैथिली पाठ-संकेत : बाबू आ पितामहक विवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्त्रीजीवनक सम्भावित वैकल्पिक भविष्यक असफलता।

07 | मैथिली पृ. १०-११ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बाँस पर चढ़ब, आम तोड़ब, बाल-विधवा बनब

मैथिली पाठ-संकेत : चंचल बालिकाक स्वभाव आ बुढ़ापक स्मृति

आलोचनात्मक टिप्पणी : व्यंग्य-करुणाक दुहरा भावकें समतुल्य राखब।

08 | मैथिली पृ. ११-१२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : गामक सभ घर पर शशिताराक व्यवहारिक नियन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : ग्राम-पालनहार आ घरक कर्ता

आलोचनात्मक टिप्पणी : नायिका केवल पीड़िता नहि; संरचना केन्द्रीय शक्ति सेहो।

09 | मैथिली पृ. १२-१३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : ननीबालाक बीमारी-ग्रस्त नातिन आ आर्थिक सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : रोगी परिवारक लेल रुपैया देबाक प्रसंग

आलोचनात्मक टिप्पणी : कठोर कथनक भीतर करुणा; शब्दशः सँ बेसी भाव-निष्ठा।

10 | मैथिली पृ. १३-१४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : सत्यचरणक परिवारक विवाह-सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : कन्याक आवश्यकता बुझि उपहार देब

आलोचनात्मक टिप्पणी : दान नहि, सामाजिक अन्तरनिर्भरताक लोक-नीति।

11 | मैथिली पृ. १४-१५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : तेल-मन्त्र आ परिवारक विश्वास

मैथिली पाठ-संकेत : शोभाक माय आ तैलक औषधीय-लोकविश्वास

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोकआस्थाक हास्य बनाम उपहासक भेद।

12 | मैथिली पृ. १५-१६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरक भोजन, मौसम, पूजा, कोठी सब सँ निर्देश

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक गृहव्यवस्था सम्बन्धी वचन

आलोचनात्मक टिप्पणी : सूचीमय वाक्य शशिताराक ऊर्जाक लय बनबैत अछि।

13 | मैथिली पृ. १६-१७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विवाहमे वरकें निहारबाक अवसर नहि

मैथिली पाठ-संकेत : नौ वर्षक कन्याक जिद्द सँ न देखल वर

आलोचनात्मक टिप्पणी : कथावाचकक विडम्बनात्मक कोमलता परखबाक स्थल।

14 | मैथिली पृ. १७-१८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विदाइपर फूलपुरक लोकक चिन्ता

मैथिली पाठ-संकेत : गामक सामुदायिक निर्भरता

आलोचनात्मक टिप्पणी : एकटा स्त्रीक श्रमसँ गाम चलैछ, ई पाठक अर्थ।

15 | मैथिली पृ. १८-२० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पौ फाटिते स्नान, फूल चुनब, बालककें डाँटब

मैथिली पाठ-संकेत : दैनिक कर्म आ शासक स्वर

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरेलू कर्तव्य आ सार्वजनिक नैतिक पहराक द्वैत।

16 | मैथिली पृ. २०-२१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अनाथ मास्टरसँ रोजक संवाद

मैथिली पाठ-संकेत : विद्यालयक शिक्षक आ “पिसी” सम्बोधन

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोक-सम्बोधन शब्दव्यवस्था बुझब, सरल संस्कृतकरण नहि।

तुलनात्मक खण्ड 2 : ग्रामसेवा, विधिक दावा आ वीरनगर

बंगला साक्ष्य: “सोनात्र कोटो - 2”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

17 | मैथिली पृ. २१-२२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अनाथक उम्र आ पुरान सम्बन्ध

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराकें पिसी कहल जाएब

आलोचनात्मक टिप्पणी : वंशसँ बाहर सामाजिक पिसी-सम्बन्ध ओझल नहि हो।

18 | मैथिली पृ. २२-२३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नारु बसुक घरमे काम आ पढ़ाइ

मैथिली पाठ-संकेत : बेरोजगारक परिवारक मदद

आलोचनात्मक टिप्पणी : उपकारक प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष नीति मूल विचार।

19 | मैथिली पृ. २३-२४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नारुक भार्याक सूक्ष्म घरेलू श्रम

मैथिली पाठ-संकेत : अन्न, बड़ी, आचार बनाए आर्थिक सहारा

आलोचनात्मक टिप्पणी : अनुवादमे श्रमक सम्मान आ वर्गीय भेदक बोध।

20 | मैथिली पृ. २४-२५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : 'छोट लोक'क नारी आ भद्र स्त्रीक श्रम-निषेध

मैथिली पाठ-संकेत : जाति-वर्ग अनुसार स्त्रीक श्रम पर दृष्टि

आलोचनात्मक टिप्पणी : शशिताराक कथनकेँ लेखकक अन्तिम मत नहि बनाबी।

21 | मैथिली पृ. २५-२६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बिपिन वैद्य, माता, दन्तौन, उपाय

मैथिली पाठ-संकेत : लोक चिकित्सा आ माँक सेवा

आलोचनात्मक टिप्पणी : कटाक्ष, चिकित्सकीय लोकसंस्कृति दूनू जोगाउ।

22 | मैथिली पृ. २६-२७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : दीनक परिवारक खाद्य-सहायता

मैथिली पाठ-संकेत : भोजन-वितरणक अप्रत्यक्ष तरकीब

आलोचनात्मक टिप्पणी : दार्शनिक मानवता नहि, सूक्ष्म व्यावहारिक मदद।

23 | मैथिली पृ. २७-२९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : धार्मिक भाषा आ जनहितक दाव

मैथिली पाठ-संकेत : उपदेशक बीच व्यंग्यात्मक लय

आलोचनात्मक टिप्पणी : विडम्बनाक दोहरापन पात्रक जटिलता बनबैत अछि।

24 | मैथिली पृ. २९-३० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : समय-सारिणी, स्त्री-शरीर आ भोजन

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक अनुशासन

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुनरुक्तिक गति जखन काटल जाइत अछि तऽ स्वर हलुक पड़ैत अछि।

25 | मैथिली पृ. ३०-३२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक मनमे सासुरक सम्पत्तिक खबर

मैथिली पाठ-संकेत : सम्पत्ति-अधिकारक आशा जागब

आलोचनात्मक टिप्पणी : शशिताराक सम्पत्तिक दावा सासुरक उत्तराधिकारसँ सम्बन्धित अछि; ई प्रसंग स्त्रीक वैधानिक स्वत्व आ पारिवारिक न्यायक प्रश्न बनैत अछि।

26 | मैथिली पृ. ३२-३४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जेठ सासुक मृत्यु आ दावा-पक्ष

मैथिली पाठ-संकेत : बूढ़ी सासुक मृत्युपर उत्तराधिकार-संवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : मृत्युक समय आ कानूनी हक अलग कारण घटक।

27 | मैथिली पृ. ३४-३५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जमिनक हिस्सा आ कानूनी हिसाब

मैथिली पाठ-संकेत : बिघा, धनराशि आ वकीली व्याख्या

आलोचनात्मक टिप्पणी : आँकड़ा अनुक्रम स्वच्छ राखब; कानूनक अनुमान साबित नहि।

28 | मैथिली पृ. ३५-३६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक संग वीरनगरक यात्रा

मैथिली पाठ-संकेत : जायब मात्र नहि, बसबाक तैयारी

आलोचनात्मक टिप्पणी : यात्राक क्रिया सामाजिक विद्रोहक नाटकीय मुद्रा।

29 | मैथिली पृ. ३६-३७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : एकादशीक निर्बाह आ संसाधन साथ रखब

मैथिली पाठ-संकेत : खाए-पिए बिना घर पहुँचल विधवा

आलोचनात्मक टिप्पणी : व्रत स्त्रीक अनुशासन आ रणनीतिक सुविधा दुनू।

30 | मैथिली पृ. ३७-३८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक संग पहिल भेंट आ नमन

मैथिली पाठ-संकेत : परिवारक अपरिचित दुलहीक आगमन

आलोचनात्मक टिप्पणी : 'बड़की बौ'क सामाजिक अधिकार पर विरोध।

31 | मैथिली पृ. ३८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अतिथिक अपन भोजन व्यवस्था

मैथिली पाठ-संकेत : आत्मनिर्भरता आ राजबालाक असहजता

आलोचनात्मक टिप्पणी : कथानक द्वन्द्व आतिथ्यक भाषासँ खुलैत अछि।

32 | मैथिली पृ. ३८-३९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जर्जर भवन देखिते बाल्यस्मृति जागब

मैथिली पाठ-संकेत : घरक दीवार-सीढ़ी परिचित लगब

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्मृति आ स्वत्व अलग-अलग तह अछि।

तुलनात्मक खण्ड 3 : घर, स्मृति आ पारिवारिक संघर्ष

बंगला साक्ष्य: “सोनार कोटो – 3”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

33 | मैथिली पृ. ३९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नवीन शहरक भीतर अति पुरान घर

मैथिली पाठ-संकेत : वीरनगरक आधुनिकता आ भवनक जड़ता

आलोचनात्मक टिप्पणी : अतीत/वर्तमानक रूपक: पुरान घर पछिला जीवनक भंडार।

34 | मैथिली पृ. ३९-४० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : सासुरक सम्पत्तिकेँ ‘हमर’ कहि उठब

मैथिली पाठ-संकेत : “हमर ससुर”क कथन

आलोचनात्मक टिप्पणी : सम्बोधन स्वयं कानूनी/भावात्मक दावा बनि जाइत अछि।

35 | मैथिली पृ. ४०-४१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक भय—हिस्सा घटत

मैथिली पाठ-संकेत : घरक संकुचित स्वामित्व-बोध

आलोचनात्मक टिप्पणी : पर-स्त्रीविरोधक सामाजिक जड़ पहिचानू केवल खलनायिका नहि।

36 | मैथिली पृ. ४१-४३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : देवरक परिवार, मन्दिरक चिन्ह

मैथिली पाठ-संकेत : देवीक मन्दिरसँ पुरान स्मृति

आलोचनात्मक टिप्पणी : धार्मिक स्थल आ विवाह-स्मृतिक संगति।

37 | मैथिली पृ. ४३-४४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पौखरिक घाट आ घरेलू उपेक्षा

मैथिली पाठ-संकेत : घरक ढाँचाक अभाव देखब

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्थापत्य वर्णन भावात्मक आधार-निर्माण बनैत अछि।

38 | मैथिली पृ. ४४-४६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक प्रवेश आ भौजाइ सम्बोधन

मैथिली पाठ-संकेत : रमेश मास्टर आ शशिताराक भेंट

आलोचनात्मक टिप्पणी : सम्बन्ध रक्तसँ बेसी स्मृतिक द्वारा जीवित होइत अछि।

39 | मैथिली पृ. ४६-४७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : विवाहक क्षण आ बालक रमेशक संस्मरण

मैथिली पाठ-संकेत : नववधू शशिताराक रूप याद पड़ब

आलोचनात्मक टिप्पणी : यादक दर्पणमे उम्रक एकाधिक काल साथ देखाइत अछि।

40 | मैथिली पृ. ४७-४८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नववधूकें परी/राजकन्याक रूपमे देखब

मैथिली पाठ-संकेत : 'परी-बौ' आ शशिताराक हँसी

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्मृतिप्रभाव जँ कम पड़त तऽ कथा-चेतना प्रभावित।

41 | मैथिली पृ. ४८-४९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : आँगनक अल्पना, सिंगार, गहना

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक विस्मृत रूपक पुनःप्राप्ति

आलोचनात्मक टिप्पणी : शरीरक सामाजिक दमनक प्रत्युत्तर स्मृति देइत अछि।

42 | मैथिली पृ. ४९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहुत कालक बाद 'हमर' घर कहल जाएब

मैथिली पाठ-संकेत : पारिवारिक भूमिकाक अनुभव

आलोचनात्मक टिप्पणी : नैतिक मिलन आ जायदादक दावा एकसंग नहि समानार्थी।

43 | मैथिली पृ. ५०-५१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबाला बेटी अन्नक संग संशय कहैत अछि

मैथिली पाठ-संकेत : शशितारा सँ वैमनस्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : राजबालाक भयकें आर्थिक सुरक्षा सँ जोड़ि पढ़ू।

44 | मैथिली पृ. ५१-५२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नाति-नातिनक मिठाई आ जादू आरोप

मैथिली पाठ-संकेत : रमेशक मिठाई लएब

आलोचनात्मक टिप्पणी : एके वस्तु पर 'दुलार' बनाम 'पक्षपात'क अर्थ।

45 | मैथिली पृ. ५२-५३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरमे विधवा अन्नक बेचैनी

मैथिली पाठ-संकेत : बेटीक ताश-खेल आ घरबाहर जयब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पात्रसँ कठोर स्वर राखब, मुदा कथनक प्रसंग न छोड़ू।

46 | मैथिली पृ. ५३-५४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक भीतर सहारेक अनुभूति

मैथिली पाठ-संकेत : शशिताराक उपस्थितिसँ मनोबल

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुष पात्र सेहो पराधीनः शक्ति-केन्द्रक उलटफेर।

तुलनात्मक खण्ड 4 : सहकार आ घरक नवनिर्माण

बंगला साक्ष्य: “सोनात्र कौटो - 4”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

47 | मैथिली पृ. ५५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश परिवारसँ अपेक्षित भरोसा नहि पाबैत

मैथिली पाठ-संकेत : राजबाला आ बाल-बच्चाक बीच संकोच

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुषक असुरक्षा आ शशिताराक संरक्षक भूमिका।

48 | मैथिली पृ. ५५-५६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : मन्दिरक आरती, मिठाई, शिष्टाचार

मैथिली पाठ-संकेत : रमेश शशिताराकेँ लेने मन्दिर गेलाह

आलोचनात्मक टिप्पणी : आदरक संस्कार द्वन्द्वक केन्द्र बनैत अछि।

49 | मैथिली पृ. ५६-५७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : नवागन्तुक बड़की भौजाइकेँ सम्बोधन

मैथिली पाठ-संकेत : रमेशक “बड़की भौजी”क प्रतिष्ठा

आलोचनात्मक टिप्पणी : मैथिली सम्बोधनक अपनत्वक समतुल्यता।

50 | मैथिली पृ. ५७-५८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अन्नक वैधव्य आ ताशक प्रसंग

मैथिली पाठ-संकेत : बेटीक अनुशासन पर शशिताराक टोक

आलोचनात्मक टिप्पणी : स्त्रीवादी पाठमे पितृसत्ताक नैतिकता सेहो चिन्हित करू।

51 | मैथिली पृ. ५८-५९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक बढैत आत्मविश्वास

मैथिली पाठ-संकेत : आँगनमे आबाज आ बातचीतक वृद्धि

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरेलू संप्रेषणहीनता सँ संवादक रूपान्तरण।

52 | मैथिली पृ. ५९-६० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : राजबालाक आशंका आ व्यंग्य

मैथिली पाठ-संकेत : घरक भीतर नब पक्षबन्दी

आलोचनात्मक टिप्पणी : कारो बातकेँ लेखकक समर्थन नहि मानल जाय।

53 | मैथिली पृ. ६०-६१ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : घरक मरम्मत लेल ठोस प्रस्ताव

मैथिली पाठ-संकेत : गृह-व्यवस्थाक जर्जरता पर उपाय

आलोचनात्मक टिप्पणी : भवन-निर्माण भावात्मक नवजन्मक ठोस रूप।

54 | मैथिली पृ. ६१-६३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश नब उत्साहसँ घर बदलय चाहैत

मैथिली पाठ-संकेत : भीतरक डर कम होयब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पुरुष-एजेसी पुनःप्राप्ति शशिताराक सहयोगसँ।

55 | मैथिली पृ. ६३-६४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जमिन बेचबाक ग्राहक, हिस्साक शर्त

मैथिली पाठ-संकेत : अपन हिस्सा सँ खर्च करबाक निर्णय

आलोचनात्मक टिप्पणी : आर्थिक समझौता: अधिकार दान बनि नहि जाय।

56 | मैथिली पृ. ६४-६६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : दस बिघा आ दस हजारक हिसाब

मैथिली पाठ-संकेत : जायदादक रुपया सासुरक घर-निर्माणमे

आलोचनात्मक टिप्पणी : अंकक सत्यापन हेतु दूनू स्थलकेँ पुनःपढ़बाक चाही।

57 | मैथिली पृ. ६६-६८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक संकोच आ घरमे रहबाक निमन्त्रण

मैथिली पाठ-संकेत : आश्रयक पारस्परिक वचन

आलोचनात्मक टिप्पणी : 'हम'क सम्बन्ध निर्माणाधीन, सतही रोमांस नहि।

58 | मैथिली पृ. ६८-७० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बहिरागैत लोकक संशय

मैथिली पाठ-संकेत : स्त्रीक प्रभाव पर आरोप

आलोचनात्मक टिप्पणी : लोकक निन्दा उपन्यासक नैतिक केन्द्र नहि।

59 | मैथिली पृ. ७०-७२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जीवेश द्वारा भूमि-बिक्री पर आपत्ति

मैथिली पाठ-संकेत : बेटाक प्रश्न आ बापक मौन

आलोचनात्मक टिप्पणी : पीढ़ीगत श्रम/हक/शासनक संघर्ष।

60 | मैथिली पृ. ७२-७३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : शशितारा अपन अधिकारक खुलेआम प्रतिरक्षा करैत छथि

मैथिली पाठ-संकेत : विवादमे स्वयंक निर्णयक घोषणा

आलोचनात्मक टिप्पणी : कानूनी अधिकार आ दयादृष्टिक भेद महत्त्वपूर्ण।

तुलनात्मक खण्ड 5 : नवजीवन, अपनत्व आ अन्तिम रूपक

बंगला साक्ष्य: “सोनार कोठे – 5”; मैथिली समतुल्य: नीचाँ अंकित छपल पृष्ठ।

61 | मैथिली पृ. ७३–७४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : अजितक आक्षेप: जमीन बेचि लाभ कियैक न लेल

मैथिली पाठ-संकेत : उकिल भातिजक संग संवाद

आलोचनात्मक टिप्पणी : लाभक बजाय घरक उत्तरदायित्व चुनब।

62 | मैथिली पृ. ७४–७५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बूढ़ घरकेँ रोगी शरीरक उपमा

मैथिली पाठ-संकेत : मरम्मतक औषधीक-रूपक

आलोचनात्मक टिप्पणी : रूपकक चिकित्सा-छवि मूलक संवेदना तीव्र करैत अछि।

63 | मैथिली पृ. ७५–७७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : कुँआ, पम्प, घरक नवीन योजना

मैथिली पाठ-संकेत : ट्यूबवेल आ निर्माणक चर्चा

आलोचनात्मक टिप्पणी : प्रगति केवल शहर नहि: घरक साझा श्रम।

64 | मैथिली पृ. ७७–७९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : बिजलीक आशा आ प्रकाशक चिन्तन

मैथिली पाठ-संकेत : घरमे नब आलोकक योजना

आलोचनात्मक टिप्पणी : भौतिक विद्युत् आ मानसिक उजियारक सह-प्रतीक।

65 | मैथिली पृ. ७९–८० | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : ‘आमार’ कहबाक सुख नव रूपेँ जागब

मैथिली पाठ-संकेत : अधिकारसँ बेसी अपनत्वक आभास

आलोचनात्मक टिप्पणी : साम्राज्ञी/सेविका सँ भागीदारक यात्रा।

66 | मैथिली पृ. ८०-८२ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : फूलपुरमे शशिताराक अनुपस्थिति पर प्रतिक्रिया

मैथिली पाठ-संकेत : पुरान घरमे खटकब

आलोचनात्मक टिप्पणी : ग्रामक निर्भरता सेहो स्वार्थ मिश्रित हो सकैत अछि।

67 | मैथिली पृ. ८२-८३ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : परिक विवाह आ घरे छोट समय लेल अाएब

मैथिली पाठ-संकेत : निमन्त्रणमे अल्पकाल बितायब

आलोचनात्मक टिप्पणी : पूर्व गामक उपयोगितामूलक सम्बन्ध मे प्रश्न।

68 | मैथिली पृ. ८३-८४ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : पुरनका नियंत्रणक आकर्षण कम भऽ गेल

मैथिली पाठ-संकेत : नव अनुभवसँ आत्म-आश्चर्य

आलोचनात्मक टिप्पणी : सक्रिय परिवर्तन, अचानक धर्मभ्रष्टता नहि।

69 | मैथिली पृ. ८४-८५ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश विवाह-निमन्त्रणमे आयल

मैथिली पाठ-संकेत : पुराना दुनियाक नजरमे नब संगति

आलोचनात्मक टिप्पणी : समाजक कानाफूसी काव्यात्मक विडम्बना।

70 | मैथिली पृ. ८५-८६ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : एक संग फेर वीरनगर जायब

मैथिली पाठ-संकेत : यात्राक उल्लास

आलोचनात्मक टिप्पणी : रेलयात्रा पहिने विस्थापन, अन्तमे मुक्ति।

71 | मैथिली पृ. ८६-८७ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : लोकनिन्दा आ नारीक निर्णय

मैथिली पाठ-संकेत : शशितारा अपवादसँ अनभिज्ञ/अडिग

आलोचनात्मक टिप्पणी : विधवा-स्त्रीक स्वतंत्र चलन पर सामाजिक पहरा।

72 | मैथिली पृ. ८७-८८ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेशक सहयात्रामे नव गृहकार्यक चर्चा

मैथिली पाठ-संकेत : बिजलीक पत्र आ मजदूरक काम

आलोचनात्मक टिप्पणी : घरक नब जीवन दैनिक व्यवहारसँ सिद्ध।

73 | मैथिली पृ. ८८-८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : रमेश-सहवासक चर्चा प्रेम-रूपकमे बदलैत

मैथिली पाठ-संकेत : जीवनक पहिने अनजान स्वादक अनुभूति

आलोचनात्मक टिप्पणी : भावार्थ: जीवनप्रेम; एतबैँ शरीरिक प्रेमक घोषणा साबित नहि।

74 | मैथिली पृ. ८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : जिनगीक दबाएल आकांक्षा एक पौतीमे रहबाक रूपक

मैथिली पाठ-संकेत : मैथिली अन्तमे “मोनक पौती”क अर्थ-व्यंजना

आलोचनात्मक टिप्पणी : शीर्षकान्तरिक समान केन्द्र, मुदा सोनार/स्वर्ण रूपकक प्रसंग।

75 | मैथिली पृ. ८९ | प्रमाण अ

बंगला प्रसंग : मैथिली कथाक समापन

मैथिली पाठ-संकेत : समापनक प्रेम-रूपकक संग शशिताराक कथाप्रवाह पूर्ण होइत अछि।

भाषा, संवाद आ सांस्कृतिक अर्थक निकट-पाठ

लघु बंगला-मैथिली प्रमाण: पाठमे देखल गेल ठोस स्थल

निम्न उदाहरणमे बंगला कथनक छोट अंश आ मैथिली रूपान्तरणक अर्थ-सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। पाठभेदक निर्णय करैत काल कथ्य, स्वर, सम्भावित संस्करणान्तर आ अनुवादकक भाषिक चयनकेँ पृथक् रखब आवश्यक अछि।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
१	१-८	“श्ववर्ण जव वर्ण”	“खबरि अछि जोरदार”; संवादक विस्मय; बोलचाली शैलीक कार्यात्मक समानता।
१	१०	“शशीतारा शूलपूर श्रद्धा”	शशिताराकेँ फूलपुरक केन्द्र/प्राण मानब; सामाजिक केन्द्रक रूपक; स्थानीय मुहावरा बदलितो चित्र सुरक्षित।
१	२१	“जिजिमा पुण्य शरीर”	“पुण्यात्मा छी अहाँ, पीसी”; सम्मानक सामुदायिक व्याकरण आ धर्मिक रजिस्टर।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
२	३०-३५	“भाग”	हिस्साक अधिकारक चर्चा; भूमि-सम्बन्धी कानूनी अर्थ; “पैतृक” जोड़क अधिकार नहि।
२	३९	“मनेर जगते”	शशिताराक मनमे स्मृति जागब; मानसिक भूमिसँ ऐतिहासिक घर धरि रूपक-परिवर्तन।
३	३९	“आमादेर शशुर ठाकुरेर”	“हमर ससुर” कहबाक युक्ति; प्रथमपुरुष बहुवचन स्वत्वक रणनीतिक प्रयोग।
३	४७-४९	“परीबो”	पुरनका परी-जकाँ नववधूक स्मृति; संवेग आ दृशात्मकता; अतीतक देहक पुनःप्राप्ति।
४	६६-६८	“आमार शशुरेर भिटे”	सासुरक घर बनएबाक योजना; कथा-मूलक केन्द्र पैतृक गाम नहि, सासुरक भूखंड।

बंगला खण्ड	मैथिली पृष्ठ	बंगला अल्पांश / संकेत	मैथिली स्वरूप आ व्याख्या
४	६१-६३	“एकटा जम्पडि”	शशिताराक घरेलू महत्वकेँ रूपक रूपमे देखब; व्यक्ति आ भूमि/संपत्तिक उपमाक विडम्बना।
५	७९-८०	“आमात्र”	अपन घरक सुख अनुभव करब; स्वत्वक शब्द ओकर स्वतन्त्र भावजगत खोलैत अछि।
५	८८-८९	“सोनार कोटोय”	अन्तमे ‘मोनक पौती’क उपमान; शीर्षकपर ठोस पुनर्सर्जन, बंगला सुनहरा/मूल्यवान पात्रक अर्थसँ मनक धरोहर धरि।

सम्बोधन, सम्बन्ध आ अनुवादक सामाजिक अर्थ

बंगला “जिजिमा”, “बड़दो”, “ठाकुरपो”, “दाउर” केवल शब्दकोशीय सम्बन्धसूचक रूप नहि; वक्ता-श्रोता, सामाजिक दूरी, वयस आ घरक अधिकारक सूचना दैत अछि। मैथिलीमे ‘पीसी’, ‘बड़की भौजी’, ‘ठाकुरपो/देवर’ सन निकट रूप पाठक सहजता बढबैत अछि। मुदा जेना रमेशक शशिताराकेँ ‘बड़की भौजी’ कहब आ राजबालाक शशिताराक आगमन पर चिढ़ब —दूनूमे स्थानिक पदनामक राजनीति अछि। मात्र ‘भाभी’ कहि एकर भारतीय सामान्यीकरण कए देलासँ सम्बन्धक सटीक पदानुक्रम धुँधला हो सकैत अछि।

अन्तिम अपवाद-प्रसंगमे लोक “विधवा”क सार्वजनिक संचारपर नियंत्रण कियैक चाहैत अछि, एहि समाजधर्मी प्रश्नकेँ सेहो सम्बोधन आ लोक-नामक अनुवाद जोड़ैत अछि। “भौजी/देवर” आ प्रेम-अर्थक सहस्थिति एक जटिल नैतिक स्थान बनबैत अछि; पाठकेँ एकरेखीय रोमानी कथा मानलासँ मूलक विडम्बना घटत।

वाक्यगति आ कथावाचकक विनोद

कथाक आरम्भमे खबर फैलबाक धकधकी छोट वाक्य, प्रश्नवाचक अनुक्रम आ बोलचालक अतिशयोक्तिसँ बनैत अछि। मैथिली “खबरि अछि जोरदार”, “की?”, “कखन?”, “सासुर?” इत्यादि टुकड़ानुमा प्रश्न द्वारा वही सामाजिक ताल सृजित होइत अछि। प्रभाव-समानताक स्तरपर ई अनुवादक शक्ति अछि। एहि विधाकेँ औपचारिक गद्यक नामपर दीर्घ समासयुक्त वाक्य बना देब संवादक अटपटा जुगुप्साक नाश करत।

दैनिक सूचीबद्ध उपदेशमे मूलक हास्य एतबै नहि जे शशितारा बहुत बजैत छथि; हास्य एहि बातमे अछि जे ओ परिवार, आँगन, दलान, रसोई, फूलचोर आ ग्राम्यजन सभकेँ एकहि प्रशासनिक लयमे चलबैत छथि। अनुवादमे उपदेशक पुनरावृत्ति केवळ “दुहराइ” नहि—चरित्र-निर्माणक शैली अछि।

सांस्कृतिक शब्दक छोट कोश : अर्थ-कार्य-अनुवाद प्रश्न

बंगला पद/संकेत	सम्भावित मैथिली रूप	पाठमे सामाजिक/रूपक भूमिका
शशुरवाड़ि	सासुर/सासुरक घर	विवाहजन्य सम्बन्ध, नव/पुरान स्वत्व
दैथव्य	वैधव्य/विधवापन	उमेर आ सामाजिक दण्ड
भिजिमा	पीसी	सम्बोधन, उम्र, अधिकार
ठाकुरपो	देवर/ठाकुरपो	रमेशकेँ सम्बोधन; आत्मीयता
वड़वौ	बड़की भौजी	घरक वरीय दुलहिन
दाउर	देवर	सम्बन्धक नैतिक मर्यादा
एकादशी	एकादशी	व्रत आ नारी शरीर

बंगला पद/संकेत	सम्भावित मैथिली रूप	पाठमे सामाजिक/रूपक भूमिका
जिश्वाशिनी	सिंहवाहिनी	स्थानिक देवी-पूजन
आनपना	अरिपन/अल्पना	विवाह आ स्मृति-दृश्य
टिपकल	चापाकल/ट्यूबवेल	नवीकरणक साक्ष्य
भिट्टे	घर-डीह/भिट्टा	पैतृक/सासुरक निवास-भूमि
बिधा	बिधा	भूमि माप; मापन-समानता
जमि भाग	जमिनक हिस्सा	विधवाक आर्थिक अधिकार
सतीन	सौत	बहुपत्नी परिवारक रिश्ता
पौखी	पोती	वंशानुक्रम
तीर्थ	तीर्थ	आस्था आ यात्रा
प्रणाम	प्रणाम	पदानुक्रम आ शिष्टाचार
मोह	मोह/आसक्ति	व्यक्ति बनाम जीवनप्रेम
कोटो	डिबिया/पौती	भीतरक सुरक्षित चाह
सोना	सोना/सुनहर	बहुमूल्यक प्रतीक
आमार	हमर/अपन	अधिकार आ भावात्मक स्वत्व
आङिना	आँगन	गृह-स्मृति-समाज
मन्दिर	मन्दिर	स्मृति-संकेत
पुनर्निर्माण	जीर्णोद्धार	नवजीवनक रूपक

शब्दावलीमे “सम्भावित मैथिली रूप” स्तम्भक अर्थ ई नहि जे सूचीबद्ध प्रत्येक रूप सचमुच अनुवादक लिखलनि; जे रूप छपल पृष्ठसँ प्रत्यक्ष उद्धृत नहि, ओ शब्दार्थ-सम्बन्धी परीक्षण-उपकरण अछि। विशेषतः “अरिपन/अल्पना”, “चापाकल/ट्यूबवेल” आ “डिबिया/पौती”क चयन आ ओझरा अलग सँ जाँचबाक चाही।

शीर्षकान्तर, स्वत्व आ घरक पुनर्निर्माण

“सोनार कौटो” सँ “मोनक पौती”: शीर्षकान्तरक सिद्धान्त

बंगला ‘सोनार कौटो’क सामान्य अर्थ सोनाक डिबिया अथवा बहुमूल्य लघु पात्र अछि। कथा अन्तमे शशिताराक जीवन-सुख एकटा गोपनीय बहुमूल्य पात्रमे पोसाएल रहबाक कल्पना भऽ सकैत अछि। मैथिली ‘मोनक पौती’ द्रव्यात्मक सोनाक स्थानपर मनक गुप्त आकांक्षाकें केन्द्रीय बनबैत अछि। एकरा अभिप्राय-केन्द्रित शीर्षकान्तरक सम्भावना मानल जा सकैत अछि, मुदा प्रकाशकीय परिचयमे ‘Moner Jhanpi’क उल्लेख रहबाक कारण मूल बंगला शीर्षकक इतिहासकें अनिर्णीत राखब समीचीन अछि।

मुख्य सावधानी: “सोनार कौटो” आ “मोनक पौती”क नामभेद देखिकय कथा अलग मानब त्रुटि; मुदा कथा समान देखिकय प्रकाशन-इतिहास निर्विवाद मानब सेहो त्रुटि। पाठ-मिलान आ ग्रन्थसूची-मिलान अनुसन्धानक दू भिन्न काम अछि।

पैतृक गाम बनाम सासुर: स्वत्वक नब नक्षा

शशिताराक जीवनक बहुलांश माय-बाबूक गाम फूलपुरमे बीतल अछि; तँए ओतुक्का श्रम, आचार, जनता आ पारिवारिक निर्भरता हुनका सार्वजनिक शक्ति दैत अछि। वीरनगर मे पति-पक्षीय घरक जीर्णावस्था, पुरान दाम्पत्य-स्मृति आ उत्तराधिकारक सम्भावना भेटैत अछि। भूमि-सम्बन्धी घटना मूल बंगला/मैथिली दूनूमे सासुरक घरकें पुनर्जीवित करबाक प्रश्न अछि। ई मामूली शब्द-संशोधन नहि; स्त्रीक अपन घर चुनबाक अधिकार पर कथा-व्याख्याक पूरा दिशाक सुधार अछि।

रूप-देहक लोप आ अतीतक सौन्दर्यक प्रत्यावर्तन

नौ वर्षक बालिका, कच्चा सोना-जेकाँ रूप, तीर्थमे केश-त्याग, उपवाससँ बदलल देह आ वृद्धावस्थाक निर्भीक मुख—ई सभ प्रसंग मिलि शशिताराक शरीरपर समाजक इतिहास लिखैत अछि। रमेशक स्मृतिमे वही नन्हि दुलहिन परी-जेकाँ जीबि उठैत छथि। ई दृश्य शशिताराक आजीवन विधवापनक भीतर दबाएल व्यक्ति-सत्ता प्रगट करैत अछि। अनुवादमे रुक्ष वर्तमान आ अलौकिक स्मृतिक विरोध अवश्य रहबाक चाही।

घर-निर्माण: रुपैया, मिस्त्री, आँगन, चापाकल, बिजली

कथा-मध्यक जमीन-विवाद अन्ततः घरक माटि बदलबाक यत्नमे परिवर्तित होइत अछि। योजनामे ट्यूबवेल, कुआँक सुधार, आँगनक समतलीकरण, रंग-रोगन, किवाड़, दीवार आ बिजलीक चर्चा अनिवार्य कथात्मक घटना अछि; एकरा केवल पार्श्व-प्रसंग मानलासँ शशिताराक जीवनप्रेम अस्थिर प्रतीक बनि जाएत। एहिमे रमेशक भय-निवारण आ आत्मसम्मान सेहो जुड़ल अछि।

प्रेमक बहुअर्थी अन्त

बंगला अन्तिम संकेतमे प्रेम जीवनक अनजाना स्वाद प्राप्त होयबाक अनुभूतिसँ जुड़ल अछि। मैथिली समाप्तिमे सेहो शशिताराक मनमे दबाएल चाह जनम लैइत अछि। रमेश मास्टरक संग साझे योजना, समानधर्मी संवाद आ सहयात्रा—ई भावक व्यावहारिक रूप अछि। लोकक आँखि एहिमे कलंक देखैत अछि; कथावाचक ओही कलंक-शब्दकेँ पलटि नब चेतनाक स्वीकृति बनबैत अछि। एहीलिएँ “रमेशसँ लौकिक विवाह-समान प्रेम” अथवा “केवल भवन-प्रेम”—दूनों एकांगी सारांश होएत।

राजबाला आ अन्न: प्रतिपक्षमे सेहो स्त्री-पीड़ा

राजबाला अपन जीवन सासुक प्रभुत्वमे बितबैत छथि; बुढ़ापामे घर चलाबाक स्वतंत्रता चाहैत छथि। शशिताराक आगमन हुनका फेर पुरान अधीनता आ भूमि-विभाजनक भय दैत अछि। अन्न स्वयं विधवा छथिन; हुनकर ताश-खेल, बहरायब आ दूसराक अनुशासन सँ जूझब सेहो पितृसत्ताक मान्यताकेँ उजागर करैत अछि। शशितारा मुक्तिक प्रतीक थिकाइत छथि, मुदा हुनक कठोर उपदेश स्वयं कखनो स्त्री-अधिकारक विरोधी बनि उठैत अछि। एहि भीतरी विरोधक अनुवादक स्वर नष्ट नहि होएबाक चाही।

अनुवादक उपलब्धि आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

भेटल पाठसँ पुष्ट उपलब्धि

- समाचारसँ आरम्भ करबाक जोरदार लय आ बहुवचन लोक-आवाज मैथिलीमे जीवित रहैत अछि।

- मैथिली स्थानीय सम्बोधन शशिताराकें औपचारिक इतिहासक पात्र नहि, जियत लोक-परिवारक स्वभाव बनबैत अछि।
- बाल-विधवा सँ वृद्ध वयस धरि भाव-स्मृति टूटैत नहि; कथाक कालक्रम पठनीय अछि।
- अजित, राजबाला, रमेश, अन्न आ जीवेशक बीच अधिकारक बहुस्तरीय द्वन्द्व सुरक्षित रहल बुझाईत अछि।
- घरक मरम्मत, भूमि-लेनदेन, देवालय आ रेलयात्रा सन मूर्त प्रसंग अन्तिम बिम्बकें सामाजिक धरातल दैत अछि।
- अन्तिम “मोनक पौती” रूपक मनोवैज्ञानिक केन्द्रीयताकें स्पष्ट करैत अछि; ई रचनात्मक शीर्षक विकल्पक समर्थ सम्भावना अछि।

आलोचनाक शर्त: कतय ‘छूटल’ नहि कहल जा सकैत

बंगला आ मैथिली पाठक किछु कथन शैलीत: भिन्न देखाइत अछि। मुदा भिन्न पाठ-संस्करणक सम्भावनाकें ध्यानमे राखि मात्र अर्थभेदसँ ‘अनुवादक मूल वाक्य काटि देलनि’ सन आरोप सिद्ध नहि होइत अछि। ताहि लेल एतय कथ्य-साम्य, रजिस्टर आ प्रतीकक मूल्याङ्कन कएल गेल अछि; निराधार विलोपन-सूची नहि बनाओल गेल अछि।

मोनक पौती : समग्र निष्कर्ष

‘मोनक पौती’ केवल वृद्ध विधवाक सदाशय प्रवासक कथा नहि, विवाह-संस्थाक वंचना, सामाजिक नियन्त्रण, घरेलू श्रमक अदृश्य मूल्य, विधवाक सम्पत्ति-हक आ नवजीवनक जटिल आख्यान अछि। बंगला ‘সোনার কৌটো’क कथ्यसँ एकर आरम्भसँ अन्त धरि महत्त्वपूर्ण साम्य अछि। मैथिली संवादक बोलचाल, पारिवारिक सम्बोधन आ रूपकात्मक पुनर्सर्जन कृतिक सामाजिक ताप सुरक्षित रखैत अछि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण उत्तरवर्ती परिवर्तन ई अछि जे अधिकारक कारण आरम्भमे जमीन/रुपैया होइत अछि, मुदा अन्ततः जमिनक मूल्य घरक पुनर्गठन आ व्यक्ति-सत्ता बनैत अछि। अजितक कानूनी तर्क, राजबालाक असुरक्षा, रमेशक दैन्यसँ उठान आ शशिताराक आविष्कृत ‘अपन’

संसार बिना पढ़ने अन्तिम प्रेम-रूपक अधूरा रहत। स्त्रीक आत्मनिर्णय एहि उपन्यासिकाक मेरुदण्ड अछि।

पचहत्तर प्रसंग-कणिकाक तुलनाक आधारपर कथा-प्रवाह, पात्र-सम्बन्ध आ विषयगत समतुल्यताक विस्तृत आकलन सम्भव अछि। शब्दशः समानता अथवा विशिष्ट विलोपनक दावा करबाक लेल दूनू कृतिक मुद्रित संस्करणक सम्पूर्ण पाठमे अधिक सूक्ष्म मिलान अपेक्षित अछि।

अध्याय २ : समय-संकेत — चौदहो कथाक समग्र विवेचन

आधार-कृति : कमला चौधरी, समय-संकेत, कथा-संग्रह, २०१०। मूल कथा-पृष्ठ १३-१०४।

कथा-क्रम आ विवेचनक योजना

‘समय-संकेत’क मूल कथा-क्रम अक्षुण्ण राखल गेल अछि। उल्लेखित पृष्ठाङ्क कथा-संग्रहक मुद्रित पृष्ठक अछि।

क्रम	कथाक नाम	मूल पृष्ठ
१	समय-संकेत	१३-१८
२	पैघ लोक	१९-२६
३	बदला	२७-३३
४	धूरी	३४-३८
५	गुलाब काकी	३९-४८
६	युद्ध	४९-५३
७	गुणनफल	५४-६३
८	आकांक्षा	६४-७१
९	अहिबातक हार	७२-७७
१०	काल-चक्र	७८-८१
११	दृष्टिकोण	८२-८८
१२	निर्णय	८९-९४
१३	बाटे बिलायल पानि	९५-९९
१४	अपराजिता	१००-१०४

‘समय-संकेत’क कथा-शीर्षक, कथा-क्रम, पात्र, घटनाक्रम आ पृष्ठ-संकेतकेँ केन्द्रमे राखि विवेचन कएल गेल अछि। संग्रहक ‘लेखकीय’ आ ‘नारी-विमर्शक नारी-लेखनी’ शीर्षक भूमिकाक वैचारिक सन्दर्भ सेहो समाविष्ट अछि। प्रत्येक कथाक कथावस्तु आ ओकर आलोचनात्मक अर्थमे भेद रखल गेल अछि।

लेखिकाक कथादृष्टि आ संग्रहक मूल स्वर

संग्रहक आरम्भमे प्रस्तुत ‘नारी-विमर्शक नारी-लेखनी’ शीर्षक भूमिका आ लेखिकाक ‘लेखकीय’ अलग-अलग पाठकीय द्वार खोलैत अछि। भूमिका संग्रहक स्त्रीकेन्द्रित पक्षपर बल दैत अछि। लेखिका अपन कथालेखनक सामाजिक आधार आ अनुभवसँ बनल स्त्रीपात्रक चर्चामे परिवार, परिस्थिति आ जीवनक बिसंगतिकें महत्त्व दैत छथि। आलोचनाक दृष्टिसँ भूमिका, लेखकक आत्मवक्तव्य आ कथा स्वयं—ई तीनू एकहि वस्तु नहि अछि; तीनूकें अलग पढ़बाक आवश्यकता अछि।

एहि संग्रहक समाज केवल स्त्री आ पुरुषक दू विरोधी पक्षमे विभक्त नहि अछि। एकर कथासभमे धनिक आ निर्धन, युवा आ वृद्ध, परिवारक आश्रित आ स्वावलम्बी, शारीरिक रूपेँ समर्थ आ असमर्थ, परम्परापर विश्वास करनिहार आ नवनिर्णय लेनिहार लोक सभ उपस्थित छथि। एहि विविधतामे स्त्रीक संघर्ष एकटा महत्त्वपूर्ण सूत्र बनैत अछि।

संग्रहक कथा-क्रम देखलासँ ‘समय-संकेत’ सामाजिक अधिकारक जागरणसँ शुरुआत करैत अछि आ ‘अपराजिता’ व्यक्ति-विशेषक आत्मबलपर समाप्त होइत अछि। बीचक कथासभ जीवनक अलग-अलग पड़ावमे मानवीय गरिमा केना सुरक्षित रहय, ई प्रश्न उठबैत अछि। एकरा संग्रहक सम्भावित समग्र स्वर मानल जा सकैत अछि; ई सम्पादकीय उद्देश्यक प्रमाणित वक्तव्य नहि, आलोचनात्मक पाठन थिक।

चौदहो कथाक पृथक आलोचनात्मक अध्ययन

समय-संकेत

मूल पृष्ठ : १३-१८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : सुखना, बिलटी, राजा बाबू आ मास्टर साहेब

कथावस्तु आ परिवेश : गामक सामाजिक बनोट एहि कथाक आधार थिक। सुखना आ बिलटीक जीवन आर्थिक अभाव, श्रम आ अधिकारहीनताक दबाबमे चलैत अछि। राजा बाबूक प्रभुत्व एहन व्यवस्थाक प्रतिनिधित्व करैत अछि जाहिमे साधारण लोक अपन अधिकारक चर्चा करबामे सेहो सशङ्क रहैत अछि। कथाक आरम्भमे सुखनाक मनःस्थिति एहि निर्भरता आ असुरक्षाकें स्पष्ट करैत अछि।

संघर्षक विकास : मास्टर साहेबक उपस्थिति कथामे विचारक नव मोड़ अनैत अछि। अधिकार, गामक सार्वजनिक व्यवस्था आ अपन हिस्सेदारीक चर्चा सुखनाक सामने एहन प्रश्न रखैत अछि, जकर उत्तर केवल व्यक्तिगत लाभ नहि, सामूहिक सम्मानसँ जुड़ल अछि। सुखना पुरनका डर आ नव चेतनाक बीच ठाढ़ अछि। बिलटीक व्यावहारिक अनुभव सेहो एहि परिवर्तनक सन्दर्भकें घरक भीतरी जीवनसँ जोड़ैत अछि।

कथाक अन्त आ अर्थ : कथाक अन्तमे परिवर्तनक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि। अधिकारक बोध जागलाक बादो सत्ता-सन्तुलन तुरन्त नहि बदलैत; मुदा सुखनाक सोच बदलैत अछि। एहि दृष्टिसँ शीर्षक ‘समय-संकेत’ समय बदलि रहल अछि, तकर सूचक थिक। नव परिस्थिति गामक लोककें अपन अधिकार समझबाक लेल प्रेरित करैत अछि।

शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : ग्रामीण बोली, संवाद आ छोट-छोट व्यावहारिक प्रसंग कथा अगाँ बढबैत अछि। एकटा पात्रक निजी अनुभवक भीतर सामाजिक बदलावक व्यापक प्रश्न समेटल गेल अछि। एकरा केवल राजा बाबू आ सुखनाक व्यक्तिगत विवाद मानलासँ कथाक महत्त्व घटि जाइत; मूल प्रश्न सामाजिक अधिकार आ आत्मसम्मान थिक। कथाक उपलब्धि ई अछि जे विचार-परिवर्तनकें घटनाक्रमे विश्वसनीय रूप दैत अछि।

पैघ लोक

मूल पृष्ठ : १९-२६ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : प्रीता, नीलू आ मेमसाहेब

कथावस्तु आ परिस्थिति : प्रीताक अनुभवसँ कथा खुलैत अछि। जीवन-निर्वाहक आवश्यकता ओकरा एहन संसारसँ जोड़ैत अछि जतऽ साधनसम्पन्न लोक आ श्रमपर आश्रित लोकक बीच स्पष्ट अन्तर अछि। बेटी नीलूक प्रति ओकर स्नेह आ भविष्यक चिन्ता एहि आर्थिक प्रश्नकें मातृत्वक अनुभूतिसँ जोड़ैत अछि। मेमसाहेबक घर आ व्यवहारक माध्यमसँ बाहरी सम्पन्नताक एकटा दोसर रूप देखाइत अछि।

पात्र आ सम्बन्ध : मेमसाहेबक पद-प्रतिष्ठा आ हुनक व्यवहारक बीचक दूरी कथामे आलोचनात्मक तनाव उत्पन्न करैत अछि। प्रीता जे सम्मानक आशा करैत अछि, तकर पूर्ति धनाढ्य वातावरणमे अपने-आप नहि होइत अछि। नीलू प्रीताक भावनात्मक केन्द्र अछि; ओकर कल्याणक प्रश्न प्रीताक प्रत्येक निर्णयमे महत्त्व रखैत अछि।

शीर्षकक व्यञ्जना : ‘पैघ लोक’ कहलासँ सामान्यतः धन, हैसियत आ सामाजिक प्रभाव बुझल जाइत अछि। कथा एहि प्रचलित अर्थकेँ उलटि कऽ नैतिक प्रश्न बनबैत अछि—पैघपन मनुष्यक पदमे अछि अथवा ओकर हृदयमे? प्रीताक अनुभव पाठककेँ एहि अन्तरपर विचार करबाक बाध्य करैत अछि।

आलोचनात्मक अवलोकन : कथाक सामाजिक धरातल श्रमक गरिमा आ मनुष्यक सम्मान थिक। वर्गान्तर स्पष्ट रहितो कथा केवल वैभवक निन्दा नहि करैत; ओ व्यवहारक मानवीय मापदण्ड प्रस्तुत करैत अछि। अपन गामक प्रति प्रीताक दृष्टि परिवर्तित होइत अछि। एहि रूपेँ अपनत्व आ आत्मसम्मान समाजक बाहरी चमकसँ बेसी मूल्यवान ठहरैत अछि।

बदला

मूल पृष्ठ : २७–३३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रीता भाउड़ी, हरिचरण आ सतीश

कथावस्तु आ केन्द्रबिन्दु : एहि कथाक आधार मानवीय सम्बन्धक कटुता आ तकर बाद उत्पन्न नैतिक परीक्षा थिक। रीता भाउड़ी, हरिचरण आ सतीशक प्रसंगमे दाम्पत्य, रोग, सेवा आ पुरान आघातक स्मृति जुड़ल अछि। परिस्थिति बदललापर जकरा प्रति रोष छल, ओकर दुःख आ निर्बलता नव तरहेँ देखाइत अछि।

प्रतिशोधसँ करुणा धरि : शीर्षक ‘बदला’ पाठकमे प्रतिशोधक अपेक्षा जगबैत अछि; मुदा घटनाक विकास एहि अपेक्षाकेँ जटिल बनबैत अछि। कटु व्यवहारक प्रत्युत्तर सदिखन कटुता नहि होइत अछि। मानवीय संवेदना एकटा वैकल्पिक नैतिक उत्तर बनि उठैत अछि। कथा एहि प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि जे दुर्बल क्षणमे दोसराक प्रति कर्तव्य केहन होयबाक चाही।

स्त्रीपात्रक स्थिति : रीता भाउड़ीक व्यवहारमे सहनशीलता आ आत्मिक दृढ़ता देखल जा सकैत अछि। तथापि ओकर सेवाभावकेँ बिना प्रश्न आदर्श मानि लेब पर्याप्त नहि। स्त्रीसँ सेवा-त्यागक एकतरफा अपेक्षा सामाजिक असमानताकेँ कायम राखि सकैत अछि। एहि कारण कथा स्त्रीक मानवीय ऊँचाइ देखबैत अछि, आ संगहि आलोचककेँ त्यागक मूल्यपर फेर विचार करबाक अवसर सेहो दैत अछि।

शिल्प आ मूल्याङ्कन : कथामे जीवनक परिस्थिति बदललापर सम्बन्धक अर्थ बदलैत अछि। बाहरी घटना आ भीतरी मानसिक परिवर्तन एकसंग चलैत अछि। शीर्षकक विरोधाभासी अर्थ

कथाकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि। एकरा क्षमाक साधारण उपदेश बुझबाक स्थानपर पीड़ा, दायित्व आ नैतिक निर्णयक जटिल कथाक रूपमे पढ़ब उचित होयत।

धूरी

मूल पृष्ठ : ३४-३८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : शीला आ ओकर पारिवारिक परिवेश

कथावस्तु : शीलाक जीवन पारिवारिक आश्रय आ गृहस्थक सामान्य लयमे बढैत अछि। पति महोदयसँ जुड़ल दुर्घटना ओकरा एहन कठिन वास्तविकतासँ सामना करबैत अछि जतऽ भावनात्मक आ आर्थिक सुरक्षा एकसंग प्रश्नक घेरेमे आबि जाइत अछि। घटनाक परिणाम केवल शोक नहि, आगाँ जीवबाक उपाय खोजब सेहो अछि।

नारीक जीवनस्थिति : कथामे गृहस्थी चलौनिहार स्त्रीक श्रम महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा संकट अबिते स्पष्ट होइत अछि जे निर्भर जीवनमे निर्णयक सामर्थ्य सीमित रहि सकैत अछि। शीला अपन दायित्वसँ पाछाँ नहि हटैत अछि; ओकरा जीवनक नव परिस्थिति अनुसार अपन सामर्थ्यकेँ पहचानय पड़ैत अछि।

शीर्षक आ प्रतीक : ‘धूरी’ चक्रक केन्द्र बुझबैत अछि। एहि नाममे घर-परिवारक काज-काज, पारिवारिक व्यवस्था आ ओकरा टिकौने रखबाक अनदेखल श्रमक प्रतीकात्मक अर्थ निहित अछि। स्त्रीकेँ केवल परिधिपर देखबाक बदला ओकर केन्द्रस्थ भूमिका सामने अबैत अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : कथाक प्रमुख उपलब्धि संकटकेँ आत्मनिर्भरताक प्रश्नमे रूपान्तरित करब थिक। तथापि स्त्रीक क्षमता प्रमाणित करबाक लेल सदिखन विपत्तिक प्रतीक्षा किएक हो, ई प्रश्न सेहो एहि पाठसँ उठैत अछि। एहि अर्थमे ‘धूरी’ केवल दुःखक कथा नहि, स्त्रीक सामाजिक आ आर्थिक स्वावलम्बनक आवश्यकता पर बल दैत अछि।

गुलाब काकी

मूल पृष्ठ : ३९-४८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : गुलाब काकी आ कथावाचिका

कथाक परिदृश्य : ‘गुलाब काकी’मे एक वृद्ध स्त्रीक उपेक्षित जीवन प्रमुख अछि। हुनक जीवनमे अभाव, एकाकीपन आ सामाजिक दूरीक अनुभव अछि। कथावाचिकाक माध्यमसँ पाठक धीरे-धीरे काकीक परिस्थिति जानैत अछि। सामान्य समाज जकरा सहजहि अनदेखा करि दैत अछि, कथा ओकर जीवनकेँ अपन केन्द्र बनबैत अछि।

आत्मीयताक निर्माण : एहि कथामे व्यक्तिक परिचय ओकर आर्थिक दशा वा समाजमे स्थानसँ नहि, ओकर जीवनानुभवसँ होइत अछि। काकीक प्रति कथावाचिकाक व्यवहार संवेदनाक एकटा मानवीय क्षेत्र तैयार करैत अछि। जीवनक सूक्ष्म प्रसंग वृद्धावस्थाक असुरक्षा आ अपनत्वक आवश्यकताकेँ उभारैत अछि।

नारी-विमर्शक विशेषता : कथा युवा स्त्रीक अधिकारक प्रश्नक अतिरिक्त वृद्ध स्त्रीक गरिमा सेहो सामने अनैत अछि। जखन घर, परिवार अथवा समाज बूढ़ लोककेँ अनुपयोगी बुझय लगैत अछि, तखन ओकर अनुभव आ भावनात्मक आवश्यकता ओझराइत अछि। गुलाब काकीक उपस्थिति एहि अमानवीय दृष्टिक विरुद्ध प्रश्न अछि।

भाषा आ शिल्प : स्मृति, आत्मीय सम्बोधन आ व्यवहारिक विवरण कथामे मार्मिकता अनैत अछि। शीर्षकमे व्यक्तिक नाम संग घरेलू सम्बोधन ‘काकी’ अपनापनक अर्थ दैत अछि। एहि कथा द्वारा लेखिका सामान्य लोकजीवनक एकटा विस्मृत पात्रकेँ साहित्यक केन्द्रमे स्थापित करैत छथि।

युद्ध

मूल पृष्ठ : ४९-५३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : राजेश, चुन्नू आ पारिवारिक सदस्य

कथावस्तु : राजेश आ चुन्नूक संवाद आ व्यवहारसँ पीढ़ीक विचारभेद, जीविकाक चिन्ता आ पारिवारिक अपेक्षाक प्रश्न उभरैत अछि। एक पीढ़ी अपन अनुभवकेँ उचित मानैत अछि, तँ दोसर पीढ़ी बदलैत परिस्थितिक आधारपर निर्णय करय चाहैत अछि। एहि प्रकारेँ घरक साधारण प्रसंगो वैचारिक टकरावक स्थल बनि जाइत अछि।

‘युद्ध’क बहुविध अर्थ : कथाक युद्ध रणभूमिपर लड़ेबाक युद्ध नहि अछि। ई अपेक्षा, स्वार्थ, दायित्व, मूल्य आ आत्मसम्मानक बीच चलैत दैनिक संघर्षक रूपक थिक। बिना हथियारक संघर्ष सेहो मनुष्यक मनपर गहिर प्रभाव छोड़ैत अछि।

पात्रगत तनाव : पात्रसभक मतभिन्नतामे मात्र जिद नहि, सामाजिक परिवर्तनक दबाव सेहो अछि। नव पीढ़ीक आकांक्षा आ पुरान पीढ़ीक अनुभव दुनूकेँ एकसंग देखलासँ कथा अधिक अर्थवान होइत अछि। एकटा पक्षकेँ पूर्ण सही आ दोसराकेँ पूर्ण गलत मानलासँ एहि जटिलताक अर्थ घटि जाइत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष : एहि कथाक शक्ति दैनिक जीवनक घटना द्वारा व्यापक संघर्षबोध प्रस्तुत करबमे अछि। शीर्षक आ घटनाक बीचक दूरी पाठककेँ प्रतीकात्मक अर्थ खोजबाक लेल प्रेरित करैत अछि। पारिवारिक संवाद सामाजिक मूल्यक परिवर्तनक ग्रन्थ बनैत अछि।

गुणनफल

मूल पृष्ठ : ५४-६३ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : मीरा आ सुनील

कथासार : मीरा आ सुनीलक दाम्पत्यजीवनमे घर-गृहस्थी, आर्थिक आवश्यकता, समयक बँटवारा आ व्यक्तिगत रुचिक प्रश्न उठैत अछि। बाहरी दृष्टिसँ साधारण लगैत निर्णय दाम्पत्यक भीतर शक्ति आ अपेक्षाक अन्तरकेँ स्पष्ट करैत अछि। स्त्रीक श्रम आ इच्छाक मूल्याङ्कन एहि कथाक प्रमुख चिन्ता अछि।

मानवीय सम्बन्धक गणना : शीर्षक ‘गुणनफल’ गणितक परिचित शब्द थिक, मुदा कथामे एकर प्रयोग भावनात्मक आ सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि। सुविधा, उपयोगिता, धन आ प्रतिष्ठाक गुणा-भागमे मनुष्यक स्वतन्त्र इच्छा कतऽ रहि जाइत अछि, से प्रश्न पाठकक सामने अबैत अछि।

मीरा चरित्रक अर्थ : मीरा केवल परिवारक आवश्यकता पूरा करनिहार पात्र नहि अछि। ओकर निजी सोच, इच्छा आ जीवनक अर्थबोध सेहो अछि। दाम्पत्यकेँ न्यायपूर्ण बनयबाक लेल दुनू व्यक्तिक श्रम आ आकांक्षाक समान मान्यता आवश्यक अछि। ई विचार कथा पढ़बाक एकटा महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक आधार थिक।

शिल्प आ निष्कर्ष : घरेलू घटना आ पात्रक परस्पर व्यवहारसँ कथा सामाजिक अर्थ प्राप्त करैत अछि। अमूर्त प्रश्नकेँ जीवनक ठोस हिसाब-किताबमे उतारल गेल अछि। एहि कारण ‘गुणनफल’ दाम्पत्यक भीतरक उपयोगितावादी दृष्टि आ व्यक्तित्वक गरिमाक बीचक तनाव देखबैत अछि।

आकांक्षा

मूल पृष्ठ : ६४-७९ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : छवि आ ओकर पालन-पोषणसँ जुड़ल परिवार

कथाक मूल परिस्थिति : छविक जीवनक माध्यमसँ पालन-पोषण, स्नेह, संरक्षण आ व्यक्तिगत भविष्यमे निर्णय करबाक प्रश्न सामने अबैत अछि। परिवारक अपन अपेक्षा अछि; छविक अपन आकांक्षा। ई दुनू सदिखन एक-दोसरक अनुरूप नहि होइत अछि।

व्यक्ति आ परिवार : कथा ई स्पष्ट करैत अछि जे परिवारक स्नेह महत्त्वपूर्ण भेलो व्यक्तिक जीवनपर सम्पूर्ण अधिकारक पर्याय नहि थिक। परिवार जे उचित मानैत अछि, से युवतीक वास्तविक इच्छा होय, ई आवश्यक नहि। छविक अनुभव एहि जटिल अन्तरकें उद्घाटित करैत अछि।

स्त्रीक आत्मनिर्णय : नारी-विमर्शक दृष्टिसँ छविक व्यक्तित्वकें केन्द्रमे रखब आवश्यक अछि। विवाह वा अन्य जीवन-निर्णयमे ओकर इच्छा, डर, आशा आ समझकें उचित स्थान देबाक आवश्यकता अछि। आकांक्षा केवल स्वप्न नहि; ई अपन भविष्य स्वयं गढ़बाक मानवीय आग्रह थिक।

आलोचनात्मक विवेचन : कथाक भावनात्मक धरातल ओकर सामाजिक प्रश्नकें कमजोर नहि करैत; उलटे अधिक निकट लऽ अबैत अछि। शीर्षक व्यक्तिक भीतरक अपूर्ण इच्छाक संकेत थिक। ई कथा परिवारक संरक्षण आ स्त्रीक स्वतन्त्रताक बीच न्यायपूर्ण सन्तुलन खोजय लेल प्रेरित करैत अछि।

अहिबातक हार

मूल पृष्ठ : ७२-७७ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : राम बाबू आ हुनक बेटी अमोला

कथाक घटना-भूमि : विवाहक सामाजिक अपेक्षा, दहेज आ परिवारक प्रतिष्ठाक चिन्ता एहि कथामे प्रमुख अछि। राम बाबूक दृष्टिमे बेटीक भविष्य परम्परागत व्यवस्था अनुसार सुरक्षित बनयबाक प्रश्न प्रमुख अछि। मुदा अमोलाक सोचमे अपन जीवनक निर्णय करबाक अधिकार सेहो अछि।

प्रतीकक अर्थ : ‘अहिबातक हार’ पारम्परिक वैवाहिक सौभाग्यसँ सम्बद्ध प्रतीकात्मक शीर्षक थिक। शीर्षकक माध्यमसँ लेखिका स्त्रीक सुख आ जीवनक सार्थकता सम्बन्धी स्वीकृत मान्यतापर प्रश्न उठबैत छथि। वैवाहिक चिह्न मात्रसँ स्त्रीक व्यक्तित्वक पूर्णता निर्धारित नहि कयल जा सकैत अछि।

दहेज आ निर्णय : दहेजक दबाब विवाहकें दू व्यक्तिक सम्बन्धक अपेक्षा सामाजिक लेन-देन आ प्रतिष्ठाक विषय बना दैत अछि। अमोलाक दृष्टि एहि दबाबक समक्ष स्वतन्त्र विचारक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। पिताक चिन्ता आ बेटीक निर्णयकें एकहि सामाजिक परिस्थिति भीतर बुझब आवश्यक अछि।

आलोचनात्मक मूल्याङ्कन : एहि कथामे स्त्रीक आत्मनिर्णय केवल व्यक्तिगत विद्रोह नहि, सामाजिक मान्यताक पुनर्विचारक माध्यम थिक। शीर्षकक सांस्कृतिक अर्थ कथाकें विशिष्ट मैथिल सामाजिक सन्दर्भ दैत अछि। एहि दृष्टिसँ कथा स्त्री-विमर्श आ दहेज-विमर्श दुनूक महत्वपूर्ण पाठ अछि।

काल-चक्र

मूल पृष्ठ : ७८—८१ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : प्राण काकी आ सुधा

समय आ पीढ़ीक सम्बन्ध : प्राण काकी आ सुधाक माध्यमसँ पुरान आ नव पीढ़ीक विचारक अन्तर उपस्थित अछि। शिक्षा, रोजगार, विवाह आ स्त्रीक भविष्य सम्बन्धी पुरनका धारणाक सामना बदलैत समाजक नव आवश्यकता करैत अछि।

परिवर्तनक गति : समय केवल घड़ीक गति नहि; समाजक सोच, अवसर आ व्यवहारमे परिवर्तनक नाम सेहो थिक। एक पीढ़ीक अनुभव दोसर पीढ़ीक लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ओ हर परिस्थिति पर अपरिवर्तनीय नियम नहि बनि सकैत अछि।

स्त्री-विमर्श : नारीक जीवनपर पुरनका सामुदायिक अपेक्षा आ नवीन स्वावलम्बनक आग्रहक बीच अन्तर एहि कथामे देखाइत अछि। शिक्षा आ रोजगार स्त्रीकें नव सम्भावना दैत अछि। एहि परिवर्तनकें बुझबाक लेल पुरनका पीढ़ीक चिन्ताक पृष्ठभूमि सेहो देखबाक चाही।

शिल्प आ निष्कर्ष : छोट आकारमे कथा समयक विस्तृत सामाजिक अर्थ प्रस्तुत करैत अछि। ‘चक्र’ शब्द परिवर्तनक निरन्तरता सूचित करैत अछि। कथा सिखबैत अछि जे परम्परा आ नवीनताक सम्बन्ध जड़ विरोधक नहि, आलोचनात्मक संवादक विषय थिक।

दृष्टिकोण

मूल पृष्ठ : ८२—८८ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रंजना आ राकेश

कथाक प्रमुख प्रश्न : रंजना आ राकेशक सम्बन्धक माध्यमसँ विवाह, प्रेम, सम्मान आ शारीरिक असमर्थताकेँ लऽ कऽ समाजमे व्याप्त पूर्वाग्रहक प्रश्न उठैत अछि। बाहरी मूल्याङ्कन आ व्यक्तिगत वास्तविक गुणक बीच अन्तर कथाक प्रमुख तनाव थिक।

पात्रक निर्णय : रंजनाक सोच सामाजिक रूढ़िक यान्त्रिक अनुकरण नहि करैत अछि। राकेशक शारीरिक अवस्थाकेँ ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वक पर्याय मानब अनुचित होयत, एहि मानवीय दृष्टिक सम्भावना कथामे विकसित होइत अछि।

असमर्थता आ गरिमा : कथाकेँ दया-भावक साधारण चित्रण मानब उचित नहि। शारीरिक असमर्थ व्यक्ति सेहो पूर्ण मानवीय गरिमा, प्रेम आ निर्णयक अधिकारी अछि। एहि दृष्टिसँ कथा सामाजिक पूर्वाग्रहक आलोचना करैत अछि। रंजना द्वारा सम्बन्धक चयनमे मानवीय मूल्यक प्रधानता देखाइत अछि।

आलोचनात्मक विवेचन : ‘दृष्टिकोण’ शब्द स्वयं बतबैत अछि जे समस्या वस्तुमे मात्र नहि, ओकरा देखबाक नजरिमे सेहो रहैत अछि। लेखिका पात्रक माध्यमसँ बाहरी अपूर्णता आ भीतरी पूर्णताक सरल विभाजनसँ आगाँ बढ़ि सम्मानपूर्ण सम्बन्धक आधारपर विचार करबैत छथि।

निर्णय

मूल पृष्ठ : ८९-९४ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : रतन, मुना बहिन आ भौजी

पत्रात्मक संरचना : एहि कथाक उल्लेखनीय विशेषता एकर पत्रात्मक रूप थिक। रतन द्वारा मुना बहिनकेँ सम्बोधित पत्रक सहारे परिवारक परिस्थिति, दुर्घटना, भावनात्मक उत्तरदायित्व आ आगाँक निर्णयक आधार सामने अबैत अछि। कथावस्तु प्रत्यक्ष घटनासँ बेसी स्मरण आ आत्मकथनक रूपमे उघड़ैत अछि।

मुख्य सामाजिक प्रश्न : पारिवारिक संकटमे भौजीक भविष्य आ समाजक मान्यताक बीच टकराव उत्पन्न होइत अछि। रतनक निर्णय रूढ़ नैतिकताक समक्ष मानवीय जिम्मेवारीक प्रश्न रखैत अछि। एकर सामाजिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे परिवारक सदस्यक जीवनकेँ केवल प्रथाक अधीन नहि राखल जा सकैत अछि।

कथनशैलीक प्रभाव : पत्रमे सम्बोधनक आत्मीयता, अनुभवक पुनर्स्मरण आ निजी तर्कक कारण पाठक रतनक अन्तर्द्वन्द्वक निकट पहुँचैत अछि। तथापि पत्रात्मक रचनामे एकहि पात्रक

दृष्टि प्रधान होइत अछि; भौजीक स्वतन्त्र स्वर कतेक स्पष्ट अछि, ई अलग सँ आलोचनात्मक जाँचक विषय बनैत अछि।

मूल्याङ्कन : ‘निर्णय’मे सामाजिक साहसक प्रश्न व्यक्ति-विशेषक दायित्वसँ जुड़ैत अछि। कथा परम्परागत सम्बन्धक निषेध मात्र नहि, बदलैत परिस्थिति भीतर मानवीय न्याय खोजबाक प्रयास थिक। पत्र-शिल्प एहि नैतिक द्वन्द्वकें प्रभावपूर्ण बनबैत अछि।

बाटे बिलायल पानि

मूल पृष्ठ : ९५-९९ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : देवकी बाबू, हुनक सन्तान आ मालती

कथावस्तु : देवकी बाबूक वृद्धावस्था आ पारिवारिक एकाकीपन एहि कथाक आधार अछि। सन्तान अपन-अपन जीवनमे व्यस्त भऽ गेलाक बाद हुनक भावनात्मक आवश्यकता उपेक्षित रहि जाइत अछि। मालतीक संग सम्बन्धक सम्भावना वृद्ध व्यक्तिक जीवनमे सहचर्यक प्रश्नकें केन्द्रमे अनैत अछि।

वृद्धावस्थाक मानवीय अधिकार : वृद्ध मनुष्यकें केवल आश्रय आ भरण-पोषणक वस्तु मानब पर्याप्त नहि। अपनत्व, संवाद, स्नेह आ स्वतन्त्र निर्णयक आवश्यकता जीवनक अन्तिम अवस्थाधरि बनल रहैत अछि। देवकी बाबूक परिस्थिति एहि सत्यकें उभारैत अछि।

सामाजिक दृष्टि : वृद्धावस्थामे नव सहचर्य वा पुनर्विवाहक कल्पनाकें समाज शङ्काक दृष्टिसँ देखैत अछि। कथा एहि पूर्वाग्रहसँ प्रश्न करैत अछि। मनुष्यक निजी सुख आ सामाजिक स्वीकृतिक बीचक द्वन्द्व एहिमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

शीर्षक आ आलोचनात्मक निष्कर्ष : ‘बाटे बिलायल पानि’ शीर्षकमे जीवनक प्रवाह आ क्रमशः बिखरैत आशाक व्यञ्जना देखल जा सकैत अछि। कथा एकटा व्यापक प्रश्न उठबैत अछि— परिवारक प्रति कर्तव्य निभा चुकल व्यक्तिक अपने जीवनक अधिकार कतय समाप्त होइत अछि? एहि कारण ई कथा वृद्धावस्था-विमर्शक महत्त्वपूर्ण पाठ बनैत अछि।

अपराजिता

मूल पृष्ठ : १००-१०४ | प्रमुख पात्र/पात्रसमूह : यशोधरा आ ओकर पारिवारिक-सामाजिक परिवेश

कथावस्तु : यशोधराक जीवनमे प्रतियोगिता, कठिनाइ, असफलता आ पुनः प्रयत्नक अनुभव एहि कथाक आधार अछि। बाधा उपस्थित होइत रहितो ओकर मन हार नहि मानैत अछि। अनेक प्रयत्नक क्रममे आत्मविश्वास विकसित होइत अछि।

शीर्षकक संकेत : ‘अपराजिता’क अर्थ केवल प्रतियोगितामे विजय प्राप्त करनिहार नहि, बल्कि विपत्तिक समक्ष आत्मविश्वास नहि हेरौनिहार व्यक्ति सेहो थिक। शीर्षक नायिकाक मनःस्थितिक गुणकें प्रतिष्ठित करैत अछि।

स्त्रीक आत्मबल : यशोधराक जीवनक संघर्ष दर्शबैत अछि जे आत्मनिर्भरता आ सम्मानक आकांक्षा व्यक्तिगत परिश्रमसँ जुड़ल अछि। ओकर प्रयत्नक महत्त्व समाजक स्वीकृतिसँ आगाँ ओकर अपन व्यक्तित्वक विकासमे अछि।

समापनक अर्थ : संग्रहक अन्तिम कथा होयबाक कारण ‘अपराजिता’ समग्र संग्रहकें आशावादी स्वर दैत अछि। एहिसँ पूर्वक कथासभमे जे सामाजिक अवरोध, पीड़ा आ निर्णायक समस्या देखाइत अछि, तकर समक्ष आत्मबलक एकटा सम्भावित उत्तर प्रस्तुत होइत अछि। तथापि प्रत्येक व्यक्तिक सफलता केवल परिश्रमपर निर्भर नहि करैत; सामाजिक अवसर आ संरचनाक भूमिका सेहो मान्य रहबाक चाही।

कथासभक तुलनात्मक विषय-विमर्श

वर्ग, श्रम आ सामाजिक प्रतिष्ठा

‘समय-संकेत’ आ ‘पैघ लोक’ एक-दोसरक संग पढ़लासँ सामाजिक प्रतिष्ठाक दूटा रूप स्पष्ट होइत अछि। पहिल कथामे सत्ता आ अधिकारक असमान वितरण अछि; दोसरामे श्रमक मूल्य आ मनुष्यक सम्मानक प्रश्न। सुखना राजकीय अथवा स्थानीय प्रभुत्वक समक्ष अपन हिस्सेदारीक अर्थ बुझैत अछि; प्रीता धनिक परिवेशक भीतर व्यवहारक वास्तविक पैघपनक मूल्याङ्कन करैत अछि। दुनू कथामे केन्द्रस्थ प्रश्न अछि—सामाजिक हैसियतसँ अलग मनुष्यक गरिमा केना सुरक्षित रहत?

विवाह, दाम्पत्य आ स्त्रीक इच्छा

‘गुणनफल’, ‘आकांक्षा’ आ ‘अहिबातक हार’मे वैवाहिक जीवन वा वैवाहिक भविष्यमे स्त्रीक इच्छा आ सामाजिक अपेक्षाक सम्बन्ध प्रमुख अछि। विवाहकें केवल समाजक स्वीकृत संस्था मानि लेलासँ स्त्रीक व्यक्तिगत व्यक्तित्वक प्रश्न दबि जाइत अछि। ‘अहिबातक हार’ एहि तनावकें सांस्कृतिक प्रतीकक सहायता सँ उभारैत अछि, तँ ‘गुणनफल’ दाम्पत्यक भीतरी व्यवहारमे उपयोगिता आ गरिमाक संघर्ष देखबैत अछि। ‘आकांक्षा’ संरक्षण आ स्वतन्त्रताक बीचक द्वन्द्व स्पष्ट करैत अछि।

स्वावलम्बन आ आत्मबल

‘धूरी’ आ ‘अपराजिता’कें एकसंग पढ़लासँ विपत्तिक सामना करबाक स्त्री-शक्ति सामने अबैत अछि। शीलाक जीवनमे अचानक संकट आत्मनिर्भरताक आवश्यकता जगबैत अछि। यशोधराक संघर्ष निरन्तर प्रयत्न आ मनोबलक महत्त्व प्रतिष्ठित करैत अछि। एहि दुनू कथाक सकारात्मक मूल्य स्पष्ट अछि, मुदा आलोचनामे ई प्रश्न जोड़ब आवश्यक अछि जे व्यक्तिक प्रयत्नकें फलित होयबाक लेल सामाजिक सहयोग आ अवसर कतेक उपलब्ध अछि।

वृद्धावस्था, सेवा आ मानवीय सम्बन्ध

‘गुलाब काकी’ आ ‘बाटे बिलायल पानि’ वृद्धावस्थाक भिन्न परिस्थिति देखबैत अछि। पहिलमे वृद्ध स्त्रीक उपेक्षा आ अपनत्वक प्रश्न अछि; दोसरामे वृद्ध पुरुषक सहचर्य आ निजी सुखक अधिकार। ‘बदला’ सेवा आ करुणाक नैतिक समस्या प्रस्तुत करैत अछि। एहि कथासभकें एक सूत्रमे जोड़निहार बात ई अछि जे परिवारक अस्तित्व अपने-आप संवेदनाक गारंटी नहि दैत; सम्बन्धकें मानवीय बनयबा लेल प्रत्येक व्यक्तिक अनुभूतिक सम्मान आवश्यक अछि।

बदलैत समय, मान्यता आ निर्णय

‘युद्ध’ आ ‘काल-चक्र’मे पीढ़ीक अनुभव आ नवी सोचक टकराव देखाइत अछि। ‘निर्णय’ एहि विमर्शकें सामाजिक रूढ़ि आ निजी नैतिक उत्तरदायित्वक स्तरपर लऽ जाइत अछि। ‘दृष्टिकोण’ मनुष्यक मूल्याङ्कनमे पूर्वाग्रहक भूमिका देखबैत अछि। एहि कथासभमे बदलैत समयक अर्थ केवल तकनीकी वा आर्थिक बदलाव नहि, सम्बन्धकें बुझबाक नव आधारक निर्माण सेहो थिक।

कथा-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण

कथानक आ रचनाक आकार

एहि संग्रहमे अनेक कथा घरेलू घटना अथवा गामक परिचित प्रसंगसँ शुरू होइत अछि आ धीरे-धीरे सामाजिक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। पात्रक अनुभवक माध्यमसँ मूल्यपरक निष्कर्ष उभरैत अछि। किछु कथा छोट प्रसंगमे केन्द्रित अछि, किछुमे सम्बन्धक अनेक तह भेटैत अछि। ‘निर्णय’क पत्रात्मक रूप संग्रहक शिल्पगत विविधताकेँ विशेष रूपसँ चिन्हित करैत अछि।

कथोपकथनक भूमिका

‘समय-संकेत’मे सुखना, बिलटी आ मास्टर साहेबक संवाद, ‘युद्ध’मे पीढ़ीक संवाद आ ‘काल-चक्र’मे दृष्टिभेदक संवाद अर्थनिर्माणमे सहायक अछि। गामक बोलचाल आ घरेलू सम्बोधन पात्रकेँ अपन समाजसँ जोड़ैत अछि। कथोपकथन केवल सूचना देबाक साधन नहि, सामाजिक दूरी, आत्मीयता आ मूल्यक टकराव स्पष्ट करबाक माध्यम सेहो बनैत अछि।

शीर्षक-विधान

शीर्षकसभमे वर्णनात्मक आ व्यञ्जनात्मक दुनू प्रकारक प्रयोग भेटैत अछि। ‘गुलाब काकी’ व्यक्ति नाम द्वारा आत्मीयता जगबैत अछि, ‘पैघ लोक’ प्रचलित सामाजिक अर्थपर व्यङ्ग्य करैत अछि, ‘गुणनफल’ एकटा गणितीय पदकेँ सम्बन्धक प्रश्न बनबैत अछि, आ ‘युद्ध’, ‘धूरी’, ‘काल-चक्र’ तथा ‘समय-संकेत’ रूपकात्मक विस्तारक सम्भावना खोलैत अछि। ‘अहिबातक हार’क सांस्कृतिक पद विशेष मैथिल वैवाहिक परिप्रेक्ष्य स्मरण करबैत अछि।

मैथिली भाषाक स्थानीयता आ लेखकीय स्वर

मूल पोथीक भाषामे गाम-घरक व्यवहार, आत्मीय सम्बोधन, स्थानीय जीवनक शब्द आ संवादक प्राकृतिक प्रवाह भेटैत अछि। ‘पैघ’, ‘काकी’, ‘बिलटी’, ‘अहिबात’ सन पद केवल शब्दार्थ नहि, सांस्कृतिक परिस्थितिक संकेत दैत अछि। विश्लेषण लिखैत समय मूल कथाक नाम, पात्रक नाम आ सांस्कृतिक पद जथावत् राखल गेल अछि। शोधक गद्य स्वयं मानक लिखित मैथिलीमे राखबाक प्रयास कयल गेल अछि, जाहिसँ मूलक स्थानीय स्वर मेटायल नहि जाए।

कथन आ उपदेशक सम्बन्ध

किछु कथामे नैतिक सन्देश स्पष्ट रूपेँ उभरैत अछि। ई संग्रहक सामाजिक प्रतिबद्धताक विशेषता सेहो मानल जा सकैत अछि। मुदा साहित्यिक आलोचनाक दृष्टिसँ विचार स्पष्ट होयब आ कथा कलात्मक रूपेँ घटित होयब दू पृथक कसौटी अछि। एतय मूल्याङ्कनमे विचारक पक्षक संग घटनाक विश्वसनीयता, पात्रक जटिलता आ कथावस्तुक बहुअर्थी सम्भावनाकेँ सेहो महत्त्व देल गेल अछि।

नारी-विमर्श : उपलब्धि आ अन्तर्विरोध

संग्रहक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे स्त्रीपात्रसभकेँ केवल पारिवारिक भूमिकाक प्रतिनिधि नहि बनाओल गेल अछि। ओ लोकनि परिस्थिति बुझैत छथि, दुःख सहैत छथि, प्रश्न करैत छथि आ कतहु-कतहु अपन निर्णय स्वयं करैत छथि। प्रीता, शीला, मीरा, छवि, अमोला, रंजना आ यशोधराक प्रसंग विविध जीवनस्थितिमे स्त्रीक अपन जीवनक दिशा निर्धारित करबाक सामर्थ्य प्रस्तुत करैत अछि।

तथापि स्त्रीक सेवा, क्षमा आ सहनशीलताकेँ महत्त्व देबाक क्रममे एकटा प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि—की ई गुण पुरुषसँ सेहो समान रूपेँ अपेक्षित अछि? ‘बदला’क अध्ययनमे ई प्रश्न विशेष आवश्यक अछि। तहिना स्त्रीक स्वावलम्बनकेँ केवल संकट-पश्चात् उपलब्धि मानल जाए, तँ दैनिक अवसर, शिक्षा आ संसाधनक असमानता अस्पष्ट रहि जायत। ‘धूरी’ एहि अतिरिक्त विवेचनक अवसर दैत अछि।

नारी-विमर्शक आलोचनामे वृद्ध स्त्री, आर्थिक रूपेँ आश्रित स्त्री, युवती आ विवाहित स्त्रीक परिस्थिति एक समान नहि मानल जाए। ‘गुलाब काकी’क अनुभव ‘अहिबातक हार’क अमोलाक अनुभवसँ भिन्न अछि। एहि भिन्नताक सम्मान करबासँ लेखिकाक कथाजगतक व्यापकता स्पष्ट होइत अछि।

एहि कारण संग्रहक नारी-विमर्शकेँ नारा अथवा एकरेखीय विरोधमे सीमित करब ठीक नहि। एहिमे परम्पराक आलोचना अछि, मुदा पारिवारिक आत्मीयताक महत्त्व सेहो अछि; स्त्रीक स्वतन्त्रताक आग्रह अछि, मुदा दायित्व आ सहानुभूतिक प्रश्न सेहो अछि। एकर वैचारिक जटिलता एहि द्वन्द्वसँ बनैत अछि।

निष्कर्ष : समयक संकेत आ अपराजेय जीवनबोध

‘समय-संकेत’क चौदहो कथा मैथिल सामाजिक जीवनक अनेक स्तर प्रस्तुत करैत अछि। गामक श्रमिक परिवार, सम्पन्न घरक व्यवहार, दाम्पत्यक भीतरी असन्तुलन, वृद्ध लोकक एकाकीपन, युवतीक विवाह-निर्णय, पीढ़ीक वैचारिक अन्तर आ विपत्तिक समक्ष आत्मबल—ई सभ एकहि संग्रहक अङ्ग अछि। एहि विविधताक केन्द्रमे मानवीय गरिमा आ सम्बन्धक न्यायपूर्ण पुनर्विचारक प्रश्न अछि।

कथा-क्रमक आरम्भमे सुखनाक अधिकारबोध आ अन्तमे यशोधराक आत्मविश्वासकें एकसंग देखलासँ सामूहिक आ व्यक्तिगत परिवर्तनक दू सूत्र भेटैत अछि। पहिल सामाजिक संरचना प्रश्नांकित करैत अछि; दोसर प्रतिकूलतामे आत्मबलक सम्भावना जगबैत अछि। दुनूक बीचक कथासभ जीवनक कठिन विकल्पक विवरण प्रस्तुत करैत अछि।

लेखिकाक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ओ परिचित लोकजीवनमे छिपल असमानता आ संवेदनाकें कथा बनबैत छथि। मूल मैथिली भाषा, घरेलू संवाद आ सामाजिक प्रतीक एहि कथासभकें अपन क्षेत्रीय पहचान दैत अछि। एहि पहिचानकें सुरक्षित रखिते कथासभमे उपस्थित मानवीय प्रश्न व्यापक पाठकीय अर्थ प्राप्त करैत अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रह परिवर्तनक आकांक्षा आ सम्बन्धक पुनर्समीक्षाक साहित्यिक ग्रन्थ थिक। एकर पात्रसभ पूर्णतः आदर्श अथवा पूर्णतः दोषी नहि, बल्कि बदलैत सामाजिक परिस्थितिमे अर्थ खोजैत मनुष्य छथि। आलोचनाक समुचित दृष्टि एहि जटिलताकें मान्यता देब थिक।

अनुसन्धानक प्रमुख प्रतिपादन

१. चौदहो कथा अलग-अलग जीवनस्थिति चित्रित करितो मानवीय गरिमा आ सामाजिक परिवर्तनक प्रश्नसँ जुड़ल अछि।

२. स्त्रीक आत्मनिर्णय, शिक्षा, आर्थिक स्वावलम्बन आ विवाहसम्बन्धी अधिकार संग्रहक पुनरावृत्त विषय अछि।

३. सामाजिक प्रतिष्ठाक पारम्परिक मापदण्डक आलोचना 'समय-संकेत' आ 'पैघ लोक'मे विशेष स्पष्ट अछि।

४. वृद्धावस्था-विमर्श स्त्री आ पुरुष दुनू पात्रक माध्यमसँ विकसित होइत अछि; केवल पालन-पोषण नहि, स्नेह आ सहचर्य सेहो आवश्यक अछि।

५. कथासभक शीर्षक बहुधा घटनाक साधारण नाम नहि, व्यापक प्रतीक अथवा आलोचनात्मक प्रश्नक संकेत अछि।

६. पत्रात्मक 'निर्णय' संग्रहक कथन-रूपमे विविधता अनैत अछि।

७. कथाक नारी-विमर्शक मूल्याङ्कन करैत काल स्त्रीक त्यागक महिमा आ स्त्रीक स्वतन्त्रताक बीच सम्भावित तनाव सेहो देखबाक चाही।

८. मूल पोथीक भाषा आ सामाजिक सम्बोधन पात्रसभकेँ विशेष मैथिल जीवन-परिस्थितिसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय ३ : मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली

आधार-कृति : डॉ. कमला चौधरी, मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, २००८।

ग्रन्थक विषयक्षेत्र आ आलोचनात्मक दृष्टि

डॉ. कमला चौधरीक ई ग्रन्थ भाषा आ लोकसंस्कृतिक सहसम्बन्धक एक विशेष क्षेत्र—देहपर धारण कएल जाएबला वस्त्र, आभूषण आ श्रृंगार-सामग्रीसँ जुड़ल मैथिली शब्द—कें केन्द्रमे अनैत अछि। शीर्षकमे “शब्दावली” शब्द महत्त्वपूर्ण अछि : लेखिका मात्र पहिरनक सूची नहि, अपितु नामकरण, अर्थपरिवर्तन, प्रयोगपरम्परा आ साहित्यिक उपस्थितिक व्याख्या दिस अग्रसर छथि।

विषय-सूचीक क्रम स्वयं एक तर्क प्रस्तुत करैत अछि : पहिने भारतीय परम्परा, तकर बाद मैथिल परम्परा, तदनन्तर ऐतिहासिक परिवर्तन; फेर प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यक आधार; अन्तमे कोशीय वर्गीकरण आ भाषावैज्ञानिक विचार। एहि संरचनामे सांस्कृतिक इतिहास आ भाषा-विज्ञान दूटा परस्पर पूरक आधार बनैत अछि।

मूल ग्रन्थक बारह अध्यायक रूपरेखा

अध्याय	विषय	मुद्रित पृष्ठारम्भ
1	वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा	१
2	वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा	३४
3	मैथिल परम्परापर प्रभाव आ तज्जन्य परिवर्तन	६१
4	प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	६७

अध्याय	विषय	मुद्रित पृष्ठारम्भ
5	मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	९४
6	आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन	१५३
7	वेशक शब्दावली	२७२
8	आभूषणक शब्दावली	२९२
9	प्रसाधनक शब्दावली	३०२
10	ध्वनि-विचार	३१०
11	शब्द-विचार	३१६
12	उपसर्ग आ प्रत्यय विचार	३२४

प्रथम अध्याय : वेशभूषा प्रसाधनक भारतीय परम्परा

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ १ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

भारतीय परम्पराक चर्चा मैथिली शब्द-सम्पदाकेँ एक पैघ सभ्यतागत परिप्रेक्ष्यमे रखबाक प्रस्तावना अछि। वेश आ प्रसाधन केवल सौन्दर्यबोधक पदार्थ नहि, सामाजिक मर्यादा, ऋतु, अवसर, जातीय व्यवहार आ धार्मिक आचारसँ सम्बन्धित अर्थ-वाहक चिह्न होइत अछि। एहि पृष्ठभूमि बिना स्थानीय शब्दक समग्र अर्थ बुझब कठिन होइत।

भारतीय स्रोत आ मिथिलाक स्थानीय शब्दबीचक सम्बन्ध निर्धारित करबाक समय रूपक साम्य आ वास्तविक ऐतिहासिक सम्बन्धमे भेद आवश्यक अछि। संस्कृत वा प्राचीन ग्रन्थमे वस्त्रक नाम मिलब मात्रसँ मैथिलीमे ओहि शब्दक अखण्ड प्रयोग प्रमाणित नहि होइत अछि। बीचक काल, रूपान्तर, अर्थसरणि आ बोलचालक प्रमाण देखबाक आवश्यकता अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहि अध्यायक उपयोग तुलनात्मक आधार बनबामे अछि। तथापि समूचा भारतीय परिधानक रूप एकरूप नहि रहल; क्षेत्र, पदार्थ, निर्माण-प्रविधि आ सामाजिक वर्गक

कारणों विविधता विद्यमान रहल। “भारतीय” सन्दर्भकें सार्वभौम नियम मानि स्थानीय विशिष्टता विलीन नहि करबाक चाही।

एहि अध्यायसँ निकलैत अनुसन्धान-प्रश्न अछि : कोन शब्दक मूल व्यापक भारतीय परम्परामे अछि, कोन रूप मैथिलीमे विशेष अर्थ ग्रहण करैत अछि, आ कोन वस्तु एक नामसँ भिन्न क्षेत्रमे अलग-अलग बुझल जाइत अछि? एहने प्रश्न शब्दावलीक ऐतिहासिक अध्ययनकें प्रमाणपरक बनबैत अछि।

द्वितीय अध्याय : वेशभूषा प्रसाधनक मैथिल परम्परा

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ६० धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

एहि अध्यायमे अध्ययनक केन्द्र भारतीय सामान्यतासँ मैथिल लोकजीवनक विशेषता दिस सकैत अछि। स्थानीय पहिरन, स्त्री-पुरुषक शृंगार-प्रवृत्ति, सामाजिक संस्कार, विवाहादि अवसर, उपलब्ध सामग्री आ प्रचलित नाम—एहि सभक परस्पर सम्बन्ध शब्दावली बुझबाक कुंजी अछि।

मैथिल परम्पराक व्याख्यामे केवल “पुरान” आ “नव” कें विपरीत श्रेणी मानब उचित नहि। परिधानक नामक निरन्तरता रहि सकैत अछि, मुदा ओकर बनावट, तन्तु, पहिरबाक शैली वा प्रयोगक प्रसंग बदलि सकैत अछि। विपरीततः नव पदार्थ पुरान स्थानीय शब्दकें नव अर्थ सेहो दऽ सकैत अछि।

लोकस्मृति आ लिखित प्रमाणक तौल अलग-अलग कएल जाएबाक चाही। वृद्ध वक्ताक स्मृतिमे सुरक्षित नाम अत्यन्त मूल्यवान् अछि, मुदा ओकर काल-निर्धारणकें अन्य साक्ष्यसँ मिलायब आवश्यक अछि। एहि सन्दर्भमे क्षेत्रीय भेद—उत्तर-दक्षिण, नगर-गाम, सीमावर्ती भाषिक सम्पर्क—कें दर्ज करब शोधकें आर व्यापक करैत।

एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि मिथिलाक देह-संस्कृतिक भाषा-अध्ययनक उपयुक्त विषय होयबाक स्थापना अछि। भाषाक इतिहास केवल साहित्यिक शैलीक इतिहास नहि; घरेलू क्रिया, कपड़ाक नाम आ अलंकरणक पद्धति सेहो एकर जीवित अभिलेख अछि।

तृतीय अध्याय : मैथिल परम्परापर प्रभाव आ तज्जन्य परिवर्तन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ६१ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ६६ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

एहि अध्यायक पृथक् स्थापना स्वयं महत्त्वपूर्ण अछि : परम्परा स्थिर वस्तु नहि, सम्पर्क, व्यापार, राजनीति, शिक्षा, यातायात आ उत्पादन-पद्धतिक परिवर्तनसँ प्रभावित सामाजिक प्रक्रिया अछि। शब्द-परिवर्तनकेँ एहि चलायमान सन्दर्भमे पढ़ब आवश्यक अछि।

कपड़ा आ आभूषणक नवानि वस्तुक संग नवानि नाम आबि सकैत अछि। कखनो बाहरी शब्द पूर्णतः स्वीकृत होइत अछि; कखनो ध्वनिगत स्थानीय रूप बनैत अछि; कखनो प्रचलित शब्द नव वस्तुकेँ सूचित करैत अछि। भाषा-विज्ञानमे ई ऋणशब्द, अर्थ-विस्तार आ पुनर्नामकरणक प्रक्रिया छी।

वेशभूषाक परिवर्तनकेँ केवल “परम्पराक क्षय” मानब विश्लेषणक सीमा अछि। सुविधा, लागत, लैंगिक श्रम-विभाजन, उपलब्धता आ रुचिक बदलावसँ सामाजिक कार्य बदलैत अछि। एकहि समयमे विवाह-संस्कारमे पुरान पहिरन टिकि सकैत अछि आ दैनिक जीवनमे नव वस्त्र स्थान ग्रहण कऽ सकैत अछि।

समालोचनाक स्तरपर एहि अध्यायमे प्रभावक दिशा, अवधि आ माध्यमक अधिक व्यवस्थित वर्गीकरण सम्भव अछि : आन्तरिक मैथिल परिवर्तन, समीपवर्ती भाषासँ सम्पर्क आ दूरस्थ औद्योगिक वस्तुक प्रवेश—तीनू एक समान प्रक्रिया नहि अछि।

चतुर्थ अध्याय : प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ६७ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ९३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

साहित्यिक साक्ष्यक उपयोग एहि ग्रन्थक पद्धतिगत महत्त्वक केन्द्र अछि। काव्य वा प्राचीन लिखित पाठमे प्रयुक्त वेश-सम्बन्धी पद ऐतिहासिक शब्द-रूप आ सांस्कृतिक कल्पनाकेँ देखबैत अछि। मुदा काव्यक शब्द वास्तविक दैनिक व्यवहारक प्रत्यक्ष सांख्यिकीय अभिलेख नहि होइत अछि।

शब्दक उल्लेख तीन प्रकारक प्रमाण दऽ सकैत अछि : वस्तुक नामक अस्तित्व, ओकर रूपक/अलंकारिक अर्थ, अथवा तत्कालीन मूल्यबोध। उदाहरणार्थ आभूषणक उल्लेख शारीरिक वस्तुसँ अधिक सौन्दर्य, स्थिति वा भावक प्रतीकक रूपमे भऽ सकैत अछि। सन्दर्भ पढ़ने बिना शब्दार्थ निश्चित कएल नहि जा सकैत।

एहि साहित्यिक अध्यायक पढ़ाइमे ग्रन्थक रचनाकाल, उपलब्ध पाठ-संस्करण, भाषारूप आ उद्धरणक शुद्धता निर्णायक अछि। उत्तरकालीन सम्पादनक वर्तनीकेँ मूलकालीन ध्वन्यात्मक प्रमाण मानब भ्रामक भऽ सकैत अछि। प्रत्येक शब्दसँ लगैत पूर्ण पंक्ति आ स्रोतसूची अनुसन्धानकेँ पुनःपरीक्षण योग्य बनबैत।

प्राचीन शब्दक वर्तमान भाषामे अवशेष खोजबाक आग्रह उपयोगी अछि, मुदा एकहने ध्वनि रहला मात्रै अर्थक निरन्तरता सिद्ध नहि होइत अछि। वस्तुक वास्तविक संरचना आ समकालीन अर्थक तुलना करब एहि अध्यायक सशक्त सम्भावित विस्तार अछि।

पञ्चम अध्याय : मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ९४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ १५२ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

मध्यकालीन साहित्यक विस्तृत स्थान ग्रन्थक ऐतिहासिक शब्दसाक्ष्य प्रति विशेष रुचि प्रकट करैत अछि। पद्य-पंक्तिमे वस्त्र, श्रृंगार, शारीरिक सज्जा आ अलंकारित रूपक सह-अस्तित्व देखबाक सम्भावना अछि। पदावलीक प्रसंग—नायिका-वर्णन, सामाजिक उपस्थिति, धार्मिक भाव—अर्थनिर्धारणमे अन्तर उत्पन्न करैत अछि।

एहि कालक कविताक अध्ययनमे प्रतीक-भाषा आ वास्तविक पोशाककेँ पृथक् रखब अनिवार्य अछि। काव्यमे आभूषण भक्ति वा प्रेमक भावद्योतक भऽ सकैत अछि; ताहि पंक्तिसँ समाजक सभ स्त्री अथवा पुरुषक दैनिक परिधान निर्धारित नहि होइत।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे पाठभेद, हस्तलिखित परम्परा आ सम्पादकीय मानकीकरणक प्रश्न प्रासंगिक अछि। यदि एक शब्द अनेक पाठमे अलग रूपमे अछि तँ प्रतिरूप, उच्चारण आ अर्थक सम्बन्धकेँ अनिश्चितता सहित रखबाक चाही।

एहि अध्यायक अनुसन्धान-मूल्य शब्दक कालगत उपस्थिति आ साहित्यिक व्यवहारक तुलनामे अछि। पद, रचना, काल, अर्थ, रूपभेद आ वर्तमान प्रयोगक आधारपर अध्ययनक एक सुसंगत क्रम बनेत अछि।

षष्ठ अध्याय : आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित वेशभूषा प्रसाधन

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ १५३ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ २७१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

आधुनिक साहित्यपर केन्द्रित अध्याय विषय-सूचीक अनुसार ग्रन्थक सर्वाधिक विस्तृत खण्डमेसँ एक अछि। ई विस्तार स्वयं बतबैत अछि जे आधुनिक कथा, कविता आ अन्य साहित्यिक विधामे लोक-परिधानक भाषा तुलनात्मक अध्ययनक लेल समृद्ध क्षेत्र बनेत अछि।

आधुनिक रचनामे वस्त्र आ शृंगार-पद पात्रक आर्थिक स्थिति, जातीय प्रतिष्ठा, पीढ़ीक अन्तर, लैंगिक अपेक्षा, उत्सव अथवा विस्थापनक सांकेतिक सूचक भऽ सकैत अछि। साहित्यिक विवरण कखनो व्यंग्यात्मक, कखनो संस्मरणात्मक, आ कखनो यथार्थपरक होइत अछि। ताहि कारण पाठक-प्रसंगक बिना कोशीय अर्थ अपूर्ण रहैत अछि।

आधुनिक कालक उपभोक्ता-संस्कृति आ बदलैत उत्पादन-व्यवस्था शब्दसम्पदामे नव श्रेणी जोड़ि सकैत अछि। तथापि एहि व्यापक ऐतिहासिक कथनकेँ ग्रन्थक कोनो विशेष लेखक अथवा उद्धरणक प्रत्यक्ष निष्कर्ष नहियँ मानल जा सकैत; प्रत्येक उदाहरण हेतु मूल उद्धरणक पुष्टि आवश्यक अछि।

एहि अध्यायक समालोचनामे साहित्यिक प्रतिनिधित्वक समस्या उठैत अछि : साहित्यक पात्र-संसार समग्र मिथिलाक गणनात्मक नमूना नहि होइत। नगर, ग्राम, वर्ग, लिंग आ कालक असमान उपस्थिति शब्द-संग्रहक आवृत्तिकेँ प्रभावित कऽ सकैत अछि।

एहि खण्डक महत्त्व ऐतिहासिक त्रिपदी पूर्ण करबामे अछि—प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक। एहि तीनू अध्यायक अन्तर्सम्बन्धक वैज्ञानिक परीक्षण लेल वस्तु-विशेषक “प्रथम देखल लिखित प्रयोग” आ “अन्तिम देखल प्रयोग” जकाँ साक्ष्य-आधारित चिह्न उपयोगी होयत।

सप्तम अध्याय : वेशक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ २७२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ २९१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

विषय-सूचीक अनुसार एहि अध्यायसँ पुस्तक वर्णनात्मक इतिहाससँ प्रत्यक्ष कोशरूप दिस अग्रसर होइत अछि। देखल गेल मुद्रित पृष्ठ २८६-२८७ मे वस्त्रक नाम, ओकर देहपर धारण करबाक पद्धति, आकार वा उपयोगसँ सम्बन्धित परिभाषात्मक विवरण अछि। ई अंश शब्दसूचीकेँ निर्जीव नाम-संग्रहसँ अलग करैत अछि।

मूल-पाठक एहि भागमे “पायजामा/पजामा”, “मोहरी”, “पेट”, “साड़ी”, “नुआ/लुगा”, “आँचर” सन शब्द एवं रूप आँखि पड़ैत अछि। एहि सभकेँ एतय मात्र प्रत्यक्ष देखल उदाहरणक रूपमे लेल गेल अछि; कोनो शब्दक सर्वत्र समान अर्थक दावा नहि कएल गेल अछि।

विशेषतः साड़ीक वर्णनमे वस्तुक खण्ड, ओकर शरीरपर स्थान आ स्थानीय नामकरणक अन्तर्सम्बन्ध दिस संकेत भेटैत अछि। “आँचर” सन शब्द वस्त्रक विशिष्ट अंशक नाम होइतो सामाजिक व्यवहारमे अनुषंगिक अर्थ अर्जित कऽ सकैत अछि। वस्तु-भागक नामक संग क्रिया आ सामाजिक प्रसंग जोड़ब कोशक गुणवत्ता बढ़बैत अछि।

एहि अध्यायक समीक्षामे वस्त्रक प्रकार्यगत वर्गीकरण—ऊपरी वस्त्र, निचला वस्त्र, आवरण, सिलाइदार वस्त्र, असिलाइदार वस्त्र, पुरुष/स्त्री/उभय प्रयोग आ विशेष अवसर—विश्लेषणक उपयोगी उपकरण अछि। ई श्रेणी अनुसन्धानकर्ताक प्रस्ताव छी; मूल ग्रन्थक वास्तविक सर्वप्रविष्टिक प्रमाणित अनुक्रम नहि।

अष्टम अध्याय : आभूषणक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ २९२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३०१ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

आभूषणक शब्दावली वस्तुक भौतिक संरचना आ ओकर सामाजिक प्रतीकार्थ दुनूकेँ एकत्र कऽ देखबाक अवसर दैत अछि। कर्ण, नाक, गरदनि, भुजा, हाथ, कमर आ पयर—देहक स्थान अनुसार वर्गीकरण बहुधा अर्थ-व्यवस्था स्पष्ट करैत अछि।

आभूषण-पदक अध्ययनमे धातु, मणि, बनावट, जोड़ी अथवा एकल प्रयोग, विवाह वा अन्य संस्कारसँ सम्बद्धता आ स्थानीय नामक भेद अलग-अलग नोट करब चाही। एकहि वस्तुक आकार वा पदार्थ बदललासँ नाम बदलि सकैत अछि, आ एकहि नाम अनेक आकारपर लागू भऽ सकैत अछि।

लैंगिक आ वैवाहिक संकेतक प्रश्न एहि अध्यायसँ सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विमर्श अछि। मुदा कोनो आभूषणकेँ मिथिलाक सभ समुदाय वा सभ कालमे एकहि अनिवार्य सामाजिक संकेत मानि लेब अनैतिहासिक सामान्यीकरण होयत।

शब्दकोशीय दृष्टिसँ आभूषणक चित्र, देहपर प्रयोगक स्थान, समानार्थी, क्षेत्रीय वैकल्पिक रूप आ प्रमाणित साहित्यिक उद्धरण जोड़लासँ ई अध्याय लोकसांस्कृतिक अभिलेखक रूपमे आओर प्रभावशाली भऽ सकैत अछि।

नवम अध्याय : प्रसाधनक शब्दावली

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३०२ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३०९ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

प्रसाधनक क्षेत्र वस्त्र आ आभूषणसँ किंचित भिन्न अछि : एतय शरीरक सज्जा, लेपन, केश-विन्यास, सुगन्ध, अलंकरण आदि क्रिया आ सामग्री आपसमे जुड़ैत अछि। एकटा शब्द पदार्थक नाम भऽ सकैत अछि तँ दोसर ओकर उपयोगक क्रिया अथवा उपयुक्त अवसर सूचित करैत अछि।

एहि तरहक शब्दमे भौतिक पदार्थ आ सामाजिक अर्थक सीमा प्रायः परस्पर प्रवेश करैत अछि। एक वस्तु दैनिक शारीरिक स्वच्छता, सौन्दर्य, अनुष्ठान अथवा स्वास्थ्यक प्रसंगमे भिन्न अर्थ लऽ सकैत अछि। अतः मात्र एक-पंक्तिक समानार्थ देब सदिखन पर्याप्त नहि होइत।

पुरान लोक-प्रसाधन आ बाजारसँ आबि रहल नव सामग्रीक सम्बन्ध भाषिक रूपान्तरणसँ जोड़ल जा सकैत अछि। मुदा विशिष्ट उत्पादक प्रवेश-काल प्रमाणित करबा लेल अन्य ऐतिहासिक स्रोत आवश्यक होयत; वर्तमान समीक्षा स्रोत-विहीन तिथि नहि जोड़ैत अछि।

एहि अध्यायक भावी अनुसन्धानमे शब्दक पदार्थ-वर्ग, बनबबाक विधि, प्रयोगकर्ताक समूह, अवसर, निषेध-नियम आ लोकगीतमे उपस्थितिक पृथक् विवरण उपयोगी अछि।

दशम अध्याय : ध्वनि-विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३१० पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३१५ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

“ध्वनि-विचार” के समावेशसँ ई पोथी मात्र सांस्कृतिक शब्द-संग्रह नहि रहि भाषावैज्ञानिक अध्ययनक दाबी प्रस्तुत करैत अछि। वेश-प्रसाधनक शब्द समय आ क्षेत्र अनुसार उच्चारण-परिवर्तन अनुभव कऽ सकैत अछि।

भाषावैज्ञानिक परीक्षणमे मूलरूप, व्यवहृत उच्चारण, ध्वनि-स्थानान्तरण, स्वर-परिवर्तन, व्यञ्जनक सरलीकरण आ सम्पर्कजन्य रूपकेँ अलग करब अपेक्षित अछि। वर्तनीक भेद आ ध्वनिक भेद एक नहि : लिखित रूपक भिन्नताकेँ स्वतः उच्चारणक भिन्नता नहि मानबाक चाही।

शब्दक व्युत्पत्ति घोषित करबा लेल केवल रूप-साम्य पर्याप्त नहि। ऐतिहासिक मध्यवर्ती रूप, समान अर्थ आ स्पष्ट ध्वनि-नियम आवश्यक अछि। एहि कसौटीपर पुनःपरीक्षण ग्रन्थक भाषावैज्ञानिक उपलब्धिक उपयोग बढ़ा सकैत अछि।

एहि अध्यायकेँ मूल्याङ्कन करबा समय उच्चारणक स्थान, वक्ताक पीढ़ी, सामाजिक परिवेश तथा लिखित साहित्यक रूढ़ वर्तनीक अलग-अलग अभिलेखन उपयोगी होयत।

एकादश अध्याय : शब्द-विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३१६ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३२३ धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

शब्द-विचारक केन्द्र शब्दक निर्माण, रचना, वर्ग, अर्थ आ सम्बन्ध होइत अछि। एहि ग्रन्थक समग्र योजना देखलासँ एकटा विशेष प्रश्न उठैत अछि : कोन वस्तु-नाम स्थानीय मूलक अछि, कोन शब्द अन्य भाषिक परम्परासँ आबि बसल अछि, आ कोन शब्द बहुअर्थी बनल अछि?

एकहि वस्तु हेतु अनेक नाम, अथवा एकहि नामक अनेक वस्तु हेतु प्रयोग, शब्दावलीक व्यवहृत प्रकृतिक सूचक अछि। एहि परिस्थिति मे समानार्थकता, अर्थसङ्कोच, अर्थविस्तार आ संज्ञा-निर्माणक विश्लेषण मात्र शब्द-सामग्री बढ़ेबाक काज नहि, अर्थ-विज्ञानक अनुसन्धान सेहो अछि।

समालोचनात्मक रूपसँ प्रत्येक प्रविष्टिमे पद-परिचय, व्याकरणिक वर्ग, स्पष्ट अर्थ, उदाहरण, भेदक सीमा, वर्तमान प्रयोग आ स्रोत-समर्थन अनिवार्य न्यूनतम तत्त्व मानल जा सकैत अछि। ई प्रस्तावित कोशीय मानक अछि, मूल ग्रन्थक प्रत्येक प्रविष्टि एकर अनुपालन करैत अछि—एहन दावा नहि।

एहि अध्यायक प्रासंगिकता एकर क्षमता मे अछि जे लोकजीवनक वस्तुसभकेँ भाषाक अर्थतन्त्रसँ जोड़ि सकैत अछि। अन्य सामाजिक क्षेत्रक शब्दावलीसँ तुलना कएलापर मैथिली शब्दनिर्माणक सामान्य प्रवृत्ति स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

द्वादश अध्याय : उपसर्ग आ प्रत्यय विचार

मूल ग्रन्थमे एहि अध्यायक आरम्भ मुद्रित पृष्ठ ३२४ पर आ अगिला अध्यायसँ पहिने अन्तिम पृष्ठ ३४० धरि अछि (विषय-सूचीक आधारपर)।

अन्तिम अध्याय शब्दनिर्माणक रूपात्मक साधनपर दृष्टि अनैत अछि। उपसर्ग आ प्रत्ययक सहारे नवानि शब्द बनबाक प्रक्रिया वेश-भूषा-सम्बन्धी पदक संरचनात्मक अध्ययनक उपयुक्त क्षेत्र अछि।

अर्थ-विश्लेषणमे देखबाक चाही जे कोनो रूप वास्तवमे उत्पादक प्रत्यय अछि कि पुरान शब्दक अभिन्न अंश। सम्पर्कभाषाक रूपकेँ मैथिली प्रत्यय मानबाक पूर्व स्वतंत्र उदाहरण, आवृत्ति आ ध्वनिगत अनुकूलनक प्रमाण चाही।

एहि अध्यायक मूल्यांकन लेल मूल शब्द, प्रत्यययुक्त रूप, पद-भेद, अर्थ-परिवर्तन आ प्रमाणित प्रयोगक समांतर प्रस्तुति लाभकारी अछि। एहि पद्धतिसँ केवल रूप-सूची नहि, बल्कि शब्द-निर्माणक सुसंगत सिद्धान्त उभरि सकैत अछि।

ग्रन्थक अनुक्रममे ध्वनि → शब्द → उपसर्ग-प्रत्ययक क्रम भाषा-विज्ञानक पाठकीय दृष्टिसँ अर्थवान अछि। एतय सांस्कृतिक कोश आ व्याकरणिक विवेचन एकहि अध्ययनमे प्रवेश करैत अछि।

उपसंहारक आलोचनात्मक अध्ययन (मुद्रित पृष्ठ ३४१ सँ)

मूल ग्रन्थमे “उपसंहार” पृथक् देल गेल अछि। सम्पूर्ण विषय-सूचीक क्रमकेँ ध्यानमे रखलासँ एहि शोधक बृहत्तर योगदान मैथिली साहित्य, लोकजीवनक वस्तु-संस्कृति आ भाषावैज्ञानिक शब्द-अध्ययनकेँ एक अनुसन्धान-क्षेत्रमे जोड़ब अछि।

एहि ग्रन्थकेँ केवल लुप्तप्राय नामक सूची मानब एकर सम्भावनाकेँ सीमित करब होयत। ई सांस्कृतिक सन्दर्भ सहित शब्दक परिभाषा, साहित्यसँ साक्ष्य-संग्रह आ रूप-विश्लेषण तीनू स्तरकेँ एकत्र करबाक प्रयत्नक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि। तदपि पाठ-सत्यापन, मानकीकृत उल्लेख-प्रणाली आ क्षेत्रवार उपयोगक चिह्नीकरण अलग विशद जाँचक विषय अछि।

परिशिष्टक अध्ययन

परिशिष्ट (क) : शब्द-सूची — मुद्रित पृष्ठ ३४५

विषय-सूचीक अनुसार मूल ग्रन्थक समापनमे ग्रन्थक समाप्तिक पश्चात् प्राप्त अतिरिक्त शब्दक सूची देल गेल अछि। ई तथ्य सम्पादकीय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि : शब्द-संग्रह एक स्थिर पूर्णसूची नहि, शोध-समय आ क्षेत्रीय संवादक संग बढ़ैत रहबाक प्रक्रिया अछि। एहि शब्दसभक अन्तिम कोशमे पुनर्संयोजन हेतु रूप, अर्थ, प्रमाण आ उपयोग-क्षेत्र दर्ज करबाक चाही।

परिशिष्ट (ख) : सन्दर्भ ग्रन्थावली — मुद्रित पृष्ठ ३५१

सन्दर्भ-ग्रन्थावली ऐतिहासिक दावा, काव्य-उद्धरण, शब्दक व्युत्पत्ति आ समाज-सांस्कृतिक वर्णन जाँचबाक प्राथमिक साधन अछि। वर्तमान विवेचनमे मूल सूचीकेँ अक्षरशः उतारल नहि गेल अछि, तँ एतय कोनो अतिरिक्त ग्रन्थक नाम मूल लेखकपर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

परिशिष्ट (ग) : अशुद्धि ग्रन्थक सूची — मुद्रित पृष्ठ ३५४

विषय-सूचीक तृतीय परिशिष्ट “अशुद्धि ग्रन्थक सूची” नामसँ अंकित अछि। ई शीर्षक मूल सूचीसँ पठित अछि; यथार्थ अभिप्राय वा प्रविष्टि-स्वरूपक विस्तारसँ पुष्टि बिनु एकरा सामान्य “शुद्धिपत्र” मानि बदलल नहि गेल अछि। एहि भेदक संरक्षण स्रोत-निष्ठ पाठसम्पादनक आवश्यक शर्त अछि।

वेश-सम्बन्धी शब्दक निकट-पाठ

वेशक शब्दावलीक एहि दू पृष्ठमे “पायजामा/पजामा” सन्दर्भमे ओकर निर्माण आ परिधानक विवरण, “मोहरी” रूपमे निचला भागक उल्लेख, तथा “साड़ी” आ “नुआ/लुगा” सम्बन्धी चर्चा देखाइत अछि। शब्दक रूपपर स्थानीय भाषिक प्रयोगक प्रभाव बुझबाक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि।

“साड़ी”क प्रसंगमे वस्त्रक अगिला, पछिला, ऊपरक आ लम्बाइ-सम्बन्धी खण्डक विवेचन अछि। “आँचर” सेहो एहि सन्दर्भमे उपस्थित अछि। ई एक महत्त्वपूर्ण कोशीय पद्धति अछि : एकटा वस्तुक अन्तर्गत ओकर भाग-नाम, उपयोग-नाम आ सम्बन्धित क्रियाकें एक अर्थक्षेत्रमे पढ़ल जा सकैत अछि।

एहि पृष्ठक उदाहरणसँ भाषिक संरचनाक कम-सँ-कम चार स्तर स्पष्ट होइत अछि : (१) मुख्य वस्तुनाम, (२) वैकल्पिक स्थानीय रूप, (३) वस्तुक अंगक नाम, आ (४) धारण-विधिक क्रियात्मक वर्णन। एहि चार स्तरक पृथक् अनुक्रमणिका बनलासँ अध्ययनक खोज-योग्यता बढ़त।

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

१. ई पोथी मैथिल वस्त्र-संस्कृतिक अध्ययनकें शब्दसम्पदा आ साहित्यिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि; एही कारण केवल नृवंशविज्ञान वा केवल शब्दकोशक संकीर्ण वर्गमे एकरा सीमित करब उचित नहि।
२. बारह अध्यायक क्रम व्यापक भारतीय पृष्ठभूमिसँ मैथिल विशिष्टता, ऐतिहासिक बदलाव, कालक्रमिक साहित्यिक प्रमाण, कोश-संग्रह आ भाषा-विश्लेषण धरि विस्तृत अछि।
३. वेश, आभूषण आ प्रसाधन तीनू समानार्थी क्षेत्र नहि अछि : वस्तुक उपयोग, शरीरसँ सम्बन्ध आ सामाजिक प्रतीकत्वक आधारपर स्पष्ट उपवर्ग जरूरी अछि।
४. मूल ग्रन्थक प्रत्यक्ष देखल शब्दसामग्रीमे स्थानीय रूपभेद आ वस्तु-अंगक नाम महत्त्वपूर्ण अछि; एहिसँ मैथिली कोश-लेखनक समृद्धि स्पष्ट होइत अछि।

5. काव्यक वस्त्र-वर्णनकेँ सामाजिक जनगणनाक निष्कर्षक रूपमे नहि पढ़बाक चाही। प्रत्येक साहित्यिक उदाहरणक विधा, प्रसंग आ पाठभेद जाँचल जाय।
6. ऐतिहासिक निरन्तरता, बाहरी प्रभाव, व्युत्पत्ति आ विशिष्ट समुदायमे उपयोग सन दावाक प्रमाण-मानक एकहि होयब जरूरी नहि; प्रत्येक प्रकारक दावाक अलग साक्ष्य-श्रेणी चाही।
7. आगाँक विद्वत् संस्करण लेल प्रत्येक प्रविष्टि संग मुद्रित पृष्ठ, उद्धरण, रूपान्तर, अर्थ, वस्तु-वर्ग, क्षेत्र, साहित्यिक काल आ स्रोत-सत्यापनक स्पष्ट चिह्न देल जाय।

समेकित उपसंहार

कमला चौधरीक साहित्यक पाठ-विविधता एहि तीनू कृतिमे स्पष्ट होइत अछि। ‘मोनक पौती’मे परकाया-प्रवेश करैत अनुवादक भाषा आ अनुभवक बीच संवाद स्थापित करैत छथि; ‘समय-संकेत’मे कथाकारक दृष्टि समाजक असमानता, अन्तःसम्बन्ध आ निर्णयक नैतिकता पर केन्द्रित रहैत अछि; ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’मे सांस्कृतिक जीवनक वस्तुगत इतिहास शब्दक रूपमे सुरक्षित होइत अछि।

‘मोनक पौती’क शशितारा आ ‘समय-संकेत’क अनेक स्त्रीपात्र एकटा साझा प्रश्न उठबैत छथि —समाजक स्वीकृत भूमिका सँ बाहर व्यक्ति अपन इच्छा, अधिकार आ सम्मानकेँ केना सुरक्षित राखय? किन्तु पहिल कृति अनूदित उपन्यासिका अछि आ दोसर मौलिक कथा-संग्रह; दूनूक कथन-पद्धति आ लेखकीय अधिकारक अन्तरकेँ मिटाक समानान्तर रखब आलोचनात्मक भूल होयत।

वेश-भूषा-प्रसाधनक कोशीय अनुसन्धान एहिपर एक भिन्न दृष्टि खोलैत अछि। स्त्री-पुरुषक वस्त्र, आभूषण, श्रृंगार आ सामाजिक आचारक नाम केवल पदार्थक नाम नहि, इतिहास, हैसियत, अभिरुचि आ सम्बन्धक सूचक सेहो अछि। कथा आ अनुवादमे जे सांस्कृतिक शब्द सहज व्यवहारक रूपमे उपस्थित अछि, शब्दावली-ग्रन्थ ओहि शब्दक अर्थ-विकास आ परम्पराक अध्ययनक अवसर दैत अछि।

एहि तीनू दिशाकेँ जोड़ैत मैथिली भाषाक लोकजीवनसँ आत्मीयता, स्त्रीक व्यक्ति-सत्ता, सामाजिक व्यवहारक विविधता आ साहित्यिक शिल्पक सक्रियता कमला चौधरीक कृतित्वक प्रमुख विशेषता बनि उभरैत अछि। पाठक लेल ई ग्रन्थ अन्तिम फैसला सुनयबाक बदला विवेचनक एहन व्यवस्थित आधार प्रस्तुत करैत अछि, जतऽ कथा, अनुवाद आ भाषा-संस्कृतिक प्रश्न एक-दोसरकेँ आलोकित करैत अछि।

ग्रन्थसूची

क. प्राथमिक ग्रन्थ आ संस्करण

आशापूर्णा देवी। मोनक पौती। मूल बंगला कथाक मैथिली अनुवाद : कमला चौधरी।

बेरमा/निर्मली, बिहार : पल्लवी प्रकाशन, २०२२। ISBN 978-93-93135-12-4।

चौधरी, कमला। समय-संकेत। मैथिली कथा-संग्रह। २०१०। प्रकाशक : उपलब्ध ग्रन्थ-विवरणमे सुनिश्चित नहि।

चौधरी, कमला। मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली। २००८। प्रकाशक : उपलब्ध ग्रन्थ-विवरणमे सुनिश्चित नहि।

ख. अनुवाद-सिद्धान्त आ तुलनात्मक साहित्यक मुद्रित ग्रन्थ

Baker, Mona. In Other Words: A Coursebook on Translation. Second edition. London and New York: Routledge, 2011.

Bassnett, Susan. Translation Studies. Fourth edition. London and New York: Routledge, 2014.

Catford, J. C. A Linguistic Theory of Translation: An Essay in Applied Linguistics. London: Oxford University Press, 1965.

Munday, Jeremy. Introducing Translation Studies: Theories and Applications. Fourth edition. London and New York: Routledge, 2016.

Nida, Eugene A. Toward a Science of Translating: With Special Reference to Principles and Procedures Involved in Bible Translating. Leiden: E. J. Brill, 1964.

Nida, Eugene A., and Charles R. Taber. The Theory and Practice of Translation. Leiden: E. J. Brill, 1969.

Nord, Christiane. Translating as a Purposeful Activity: Functionalist Approaches Explained. Manchester: St. Jerome Publishing, 1997.

Toury, Gideon. Descriptive Translation Studies and Beyond. Amsterdam and Philadelphia: John Benjamins Publishing Company, 1995.

Venuti, Lawrence. The Translator's Invisibility: A History of Translation. London and New York: Routledge, 1995.

Niranjana, Tejaswini. Siting Translation: History, Post-Structuralism, and the Colonial Context. Berkeley: University of California Press, 1992.

Simon, Sherry. Gender in Translation: Cultural Identity and the Politics of Transmission. London and New York: Routledge, 1996.

ग. कथा-समालोचना आ कोश-विज्ञानक मुद्रित ग्रन्थ

Landau, Sidney I. Dictionaries: The Art and Craft of Lexicography. Second edition. Cambridge: Cambridge University Press, 2001.

Rimmon-Kenan, Shlomith. Narrative Fiction: Contemporary Poetics. Second edition. London: Routledge, 2002.

Zgusta, Ladislav. Manual of Lexicography. The Hague: Mouton, 1971.

घ. ग्रन्थसूचनात्मक टिप्पणी

‘मोनक पौती’क प्रकाशकीय परिचयमे उल्लिखित ‘Moner Jhanpi’ आ तुलनात्मक विवेचनमे आलेल ‘सोनार कोटो’ शीर्षकक मूल बंगला मुद्रित संस्करण, वर्ष आ प्रकाशकक परस्पर सम्बन्ध सुनिश्चित नहि अछि; ताहि लेल अपुष्ट बंगला संस्करणक पृथक् पुस्तक-प्रविष्टि बनाओल नहि गेल अछि। ‘समय-संकेत’ आ ‘मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली’क प्रकाशकक नाम पुष्टि बिना नहि जोड़ल गेल अछि।

नित नवल कमला चौधरी

कथा, अनुवाद, भाषा आ संस्कृति

‘नित नवल कमला चौधरी’ साहित्यक विविध विधाक भीतर एकहि सर्जनशील व्यक्तित्वक उपस्थिति देखबाक प्रयास अछि। कथा-साहित्य, अनुवाद आ सांस्कृतिक शब्दावली—तीनू क्षेत्रमे कमला चौधरीक रचनात्मक आ अनुसन्धानी अभिरुचिक अलग रूप देखाइत अछि।

एहि तीनू खण्डक समीक्षामे **व्यक्तित्व आ समाज, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृति तथा साहित्य आ जीवनानुभवक अन्तःसम्बन्ध** एक सूत्र बनैत अछि।

SCAN · VISIT VIDEHA



VIDEHA.CO.IN

<https://www.videha.co.in/>



VIDEHA E-JOURNAL

<https://videha-ejournal.github.io/videha/>

गजेन्द्र ठाकुर · विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© २०२६ · VIDEHA